स्वाध्याय-सुधा

प्रकाशक
दर्शनमाला जैन
सी-३/१५, अशोक विहार
नई दिल्ली-११० ०५२
दूरभाष : ७२४३१३५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१. नमस्कार महामन्त्र

णमो अरहंताणं	अरहंतों को नमस्कार।
णमो सिद्धाणं	सिद्धों को नमस्कार।
णमो आयरियाणं	आचार्यों को नमस्कार।
णमो उवज्झायाणं	उपाध्यायों को नमस्कार।
णमो लोए सव्वसाहूणं	लोक के सब सन्तों को नमस्कार।

एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावपणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥
नमस्कार के पांच पद, अक्षर हैं पैंतीस।
ग्यारह लघु चौवीस गुरु, दीर्घ पनर ह्रस्व बीस॥

२. महामन्त्र जप की विधि

प्रायः आम आदमी की शिकायत रहती है कि माला जपते हैं, पर एकाग्रता नहीं सधती। सधे भी कैसे, जब तक उसे जपने की पूरी विधि ज्ञात न हो। महामन्त्र का रंगों व स्थानों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए श्वास के साथ जप करने से मानसिक एकाग्रता भंग नहीं होगी।

	रंग	केन्द्र
णमो अरहंताणं	श्वेत	ज्ञान-केन्द्र
णमो सिद्धाणं	लाल	दर्शन-केन्द्र
णमो आयरियाणं	पीला	विशुद्धि-केन्द्र
णमो उवज्झायाणं	हरा	आनन्द-केन्द्र
णमो लोए सव्वसाहूणं	नीला	शक्ति-केन्द्र

मन्त्र जप के साथ श्वास कहां लें और कहां छोड़ें, इसकी तीन विधियां निर्दिष्ट की जा रही हैं—

१. प्रथम विधि

णमो अरहंताणं—श्वास ग्रहण करते हुए
णमो सिद्धाणं—श्वास छोड़ते हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

णमो आयरियाणं—पुनः श्वास ग्रहण करते हुए
णमो उवज्झायाणं—श्वास छोड़ते हुए
णमो लोए—पुनः श्वास ग्रहण करते हुए
सव्वसाहूणं—श्वास छोड़ते हुए

२. द्वितीय विधि

एक ही श्वास में नमस्कार मंत्र के पांचों पदों का जप किया जा सकता है।

३. तृतीय विधि

एक श्वास में नमस्कार मन्त्र के एक पद का, दूसरे श्वास में दूसरे पद का, तीसरे में तीसरे पद का, इस प्रकार जप किया जा सकता है।

महामन्त्र के जप से लाभ

नमस्कार महामन्त्र जैन परम्परा का विशिष्ट मन्त्र है। इस मंगल मंत्र के द्वारा लाखों व्यक्ति लाभान्वित हुए हैं। मंगल भावनाओं से भरा यह मन्त्र जगत् में अमंगल की राह को मंगलमय बना देता है। इस मन्त्र के साथ अनन्त साधकों की साधना है। इसकी नियमित साधना से साधक के मन में शान्ति उतरती है और भीतर छिपी हुई ऊर्जा का आविर्भाव होता है।

३. वंदन पाठ

तिक्खुत्तो	तीन बार
आयाहिणं	मैं दाईं ओर तक
पयाहिणं करेमि	प्रदक्षिणा करता हूं।
वंदामि	वन्दना करता हूं।
नमंसामि	नमस्कार करता हूं।
सक्कारेमि	सत्कार करता हूं।
सम्माणेमि	सम्मान करता हूं।
कल्लाणं	आप कल्याणकारी हैं।
मंगलं	आप मंगलकारी हैं।
देवयं	आप धर्मदेव हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चेइयं	आप ज्ञानवान् हैं।
पज्जुवासामि	मैं आपकी पर्युपासना करता हूं।
मत्थएण वंदामि	मैं मस्तक झुकाकर वंदना करता हूं।

विधि—साधु-साध्वियों को वंदन करते समय दोनों हाथ जोड़कर दाहिनी तरफ से तीन प्रदक्षिणा देते हुए उपरोक्त पाठ का उच्चारण करना चाहिए। 'मत्थएण वंदामि' कहे तब पंचांग मुद्रा में (दोनों घुटने, दोनों हाथ एवं मस्तक जमीन तक झुकाकर) नमस्कार करना चाहिए।

४. गुरुदर्शन के पांच अभिगम

१. सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए
—सचित्त द्रव्यों को छोड़ना, जैसे पुष्प आदि।

१. अचित्ताणं दव्वाणं य विओसरणयाए
—अचित द्रव्यों को भी छोड़ना, जैसे छत्र, शस्त्र, जूते आदि।

३. एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं
—एक पटी चादर से उत्तरासंग करना।

४. चक्खुप्फासे अंजलिप्पग्गहेणं
—गुरु के दृष्टिगोचर होते ही हाथ जोड़ना।

५. मणसो एगत्तीकरणेणं
—मन को उसी में एकाग्र करना।

५. मंगल पाठ

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहूमंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पवज्जामि—अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६. सामायिक पाठ

करेमि भंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं (मुहुत्तं एगं) पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

७. सामायिक की विधि

१. वेशभूषा—सादगी प्रधान (आभूषण आदि का वर्जन) भाइयों के लिए सफेद चद्दर।

२. उपकरण—आसन, मुखवस्त्रिका, माला, धार्मिक पुस्तकें आदि।

३. स्थान—शुद्ध एकान्त स्थान, धर्मस्थान या यथासंभव उपासना कक्ष।

४. करणीय—स्वाध्याय, ध्यान, जप, कायोत्सर्ग, धर्मचर्चा, मौन आदि।

५. आसन—पद्मासन या सुखासन आदि।

८. सामायिक आलोचना पाठ

नौवें सामायिक व्रत में जो कोई अतिचार (दोष) लगा हो तो मैं उसकी आलोचना करता हूं/करती हूं।

१. मन की सावद्य प्रवृत्ति की हो।

२. वचन की सावद्य प्रवृत्ति की हो।

३. शरीर की सावद्य प्रवृत्ति की हो।

४. सामायिक को स्मृति न की हो।

५. अवधि से पहले सामायिक को पूरा किया हो।

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं—इनसे लगे मेरे पाप मिथ्या हों, निष्फल हों।

९. सामायिक का अभिनव प्रयोग

वेशभूषा—सादगी प्रधान। महिलाओं में भी सफेद परिधान हो तो अच्छा रहे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपकरण—आसन, मुखवस्त्रिका, सफेद चद्दर।

आसन—सबका एक रहे। पद्मासन, सुखासन आदि में इस प्रकार पंक्तिबद्ध बैठा जाए जिससे एक-दूसरे का स्पर्श न हो। (पंक्तिबद्धता के लिए आगे-पीछे व बगल में भी देखना चाहिए।)

विधि—सर्वप्रथम त्रिपदी[1] वंदना करें।

- सामूहिक णमोक्कार मंत्र का उच्चारण करते हुए सामायिक[2] का प्रत्याख्यान करें।
- सामायिक स्वीकार करते ही एक लोगस्स का कायोत्सर्ग करें। (एक श्वासोच्छ्वास में लोगस्स के एक पद का उच्चारण हो, इस रूप में संपूर्ण लोगस्स का कायोत्सर्ग किया जाए। कायोत्सर्ग के बाद सामायिक को चार भागों में विभक्त किया जाए।

  १. जपयोग, २. स्वाध्याय योग, ३. ध्यान योग, ४. त्रिगुप्ति साधना।

१. जपयोग का प्रयोग—समय दस मिनट। ध्यान की मुद्रा में 'अ० सि० आ० उ० सा०' मंत्र का एक स्वर से उच्चारण किया जाए। (अ०सि०आ०उ०सा०)—अरहंत, सिद्ध, आयरिय, उवज्झाय, साहू—पंच परमेष्ठी के प्रथम-प्रथम अक्षरों से निर्मित पंचाक्षरी मंत्र है। पंचाक्षरी मंत्र के उच्चारण में प्रत्येक अक्षर के लिए निर्धारित

---

१. विधि—वंदना की मुद्रा (घुटनों के बल पर बैठें, दोनों हाथ जुड़े रहें) त्रिपदी वंदना कराने वाला ॐ ह्रीं श्रीं—इन तीन शब्दों का उच्चारण करता है। ॐ का उच्चारण हो तब सबके सब एक साथ हाथ जोड़कर घुटनों के बल वंदना की मुद्रा में स्थिर हो जाएं और 'वंदे' शब्द का उच्चारण करें। ह्रीं का उच्चारण होते ही सबके सब एक साथ 'अर्हम्' कहते हुए जमीन तक मस्तक को झुकाएं और तब तक झुकाए रखें जब तक श्रीं का उच्चारण न हो जाए। श्रीं का उच्चारण होते ही मस्तक को ऊपर उठाते हुए पुनः वंदना की मुद्रा में लौट आएं। इसी तरह दूसरी बार 'वंदे गुरुवरम्' एवं तीसरी बार 'वन्दे सच्चं' का उच्चारण किया जाए।

२. देखें सामायिक पाठ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थान ध्यान में रहे। परमेष्ठी के पांच स्थान हैं—

अरहन्त का स्थान—सिर का मध्यभाग
सिद्ध का स्थान—ललाट का मध्यभाग
आचार्य का स्थान—कण्ठ का मध्यभाग
उपाध्याय का स्थान—हृदय
साधु का स्थान—नाभि

(जपयोग करते समय प्रत्येक अक्षर के उच्चारण के साथ मन उस-उस स्थान पर केन्द्रित रहे)

२. **स्वाध्याय योग का प्रयोग**—समय पन्द्रह मिनट

स्वाध्याय योग में वाचन ऐसा हो, जिसमें सबका मन लगे। उदाहरण के रूप में चौवीसी के भजनों का संगान, जैन तत्त्व विद्या का वाचन, णमोक्कार मंत्र का अर्थ आदि किए जा सकते हैं।

३. **ध्यान-योग का प्रयोग**—समय दस मिनट। रीढ की हड्डी एवं गर्दन को सीधा रखते हुए बिना किसी अकड़न के श्वास को लम्बा, गहरा और मंद, आसानी से जितना लिया जा सके लें एवं उसी रूप में छोड़ें। श्वास लेते समय मन को नासाग्र पर टिकाएं। आते-जाते प्रत्येक श्वास को देखें। साथ-साथ यह भी अनुभव करें कि श्वास लेते समय पेट फूलता है और छोड़ते समय सिकुड़ता है।

४. **त्रिगुप्ति साधना का प्रयोग**—समय आसानी से जितना हो सके, तीन से पांच मिनट। इसमें मन से सोचें नहीं, वचन से बोलें नहीं और शरीर से हिलें-डुलें नहीं।

* परमेष्ठी वंदना का सामूहिक एक लय में संगान करें।
* पुनः त्रिपदी वंदना करें।
* सामायिक व्रत की आलोचना करें।[1]
* मंगल पाठ के उच्चारण के साथ सामायिक संपन्न की जाए।[2]

---

१. देखें सामायिक आलोचना पाठ

२. सामायिक का अभिनव प्रयोग उसकी विधि के ज्ञाता और अनुभवी के सान्निध्य में करना चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१०. पौषध पाठ (प्राकृत)

एक्कारसमं पोसहोववासव्वयं, असण-पाण-खाइम-साइम-पच्च-क्खाणं, अबंभ-पच्चक्खाणं, उम्मुक्कमणि-सुवण्णाइ-पच्चक्खाणं, मालावण्णगविलेवणाइ-पच्चक्खाणं, सत्थमूसलाइ-सावज्जजोग-पच्च-क्खाणं, जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

पौषध पाठ (हिन्दी)

ग्यारहवां पौषध व्रत

१. अशन-पान-खादिम-स्वादिम का प्रत्याख्यान ।
२. अब्रह्मचर्य का प्रत्याख्यान ।
३. मणि सुवर्ण का प्रत्याख्यान ।
४. माला विलेपन का प्रत्याख्यान ।
५. शस्त्र, मूसल आदि सावद्य व्यापार का प्रत्याख्यान ।

दिन-रात पर्यन्त इस पौषध व्रत का मैं पालन करूंगा। दो करण तीन योग से सावद्य व्यापार न करूंगा, न कराऊंगा मन से, वचन से, काया से ।

नोट — पानी पीकर पौषध व्रत किया जाए तो एक्कारसमं पोसहो-ववासव्वयं, के स्थान पर 'दसमं देसावगासियव्वयं' बोला जाता है। पौषध अष्टप्रहरी, चतुष्प्रहरी या इससे बड़ा जितना चाहे किया जा सकता है। चतुष्प्रहरी पौषध सूर्योदय से सूर्यास्त तक करने की भी विधि है ।

११. पौषध-आलोचना पाठ

ग्यारहवें पौषध व्रत में जो कोई अतिचार (दोष) लगा हो तो मैं उसकी आलोचना करता हूं/करती हूं ।

१. शय्या, संथारे (सोने-बैठने के स्थान और बिस्तर) का प्रति-लेखन नहीं किया हो अथवा असावधानी से किया हो ।
२. शय्या, संथारे का प्रमार्जन नहीं किया हो अथवा असावधानी से किया हो ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३. उच्चार, प्रस्रवण भूमि (मल, मूत्र, खंखार करने के स्थान) का प्रतिलेखन नहीं किया हो अथवा असावधानी से किया हो।

४. पौषध व्रत का सम्यक् प्रकार से पालन नहीं किया हो। तस्स मिच्छा मि दुक्कडं—इनसे लगे मेरे पाप मिथ्या हों, निष्फल हों।

१२. चौबीस तीर्थङ्कर

१. भगवान ऋषभ प्रभु
२. भगवान अजित प्रभु
३. भगवान संभव प्रभु
४. भगवान अभिनन्दन प्रभु
५. भगवान सुमति प्रभु
६. भगवान पद्म प्रभु
७. भगवान सुपार्श्व प्रभु
८. भगवान चन्द्र प्रभु
९. भगवान सुविधि प्रभु
१०. भगवान शीतल प्रभु
११. भगवान श्रेयांस प्रभु
१२. भगवान वासुपूज्य प्रभु
१३. भगवान विमल प्रभु
१४. भगवान अनन्त प्रभु
१५. भगवान धर्म प्रभु
१६. भगवान शान्ति प्रभु
१७. भगवान कुन्थु प्रभु
१८. भगवान अर प्रभु
१९. भगवान मल्लि प्रभु
२०. भगवान मुनिसुव्रत प्रभु
२१. भगवान नमि प्रभु
२२. भगवान अरिष्टनेमि प्रभु
२३. भगवान पार्श्व प्रभु
२४. भगवान महावीर प्रभु

१३. बीस विहरमाण

१. श्री सीमन्धर स्वामी
२. श्री युगमन्धर स्वामी
३. श्री बाहु स्वामी
४. श्री सुबाहु स्वामी
५. श्री सुजाति स्वामी
६. श्री स्वयंप्रभ स्वामी
७. श्री ऋषभानन स्वामी
८. श्री अनन्तवीर्य स्वामी
९. श्री सूरप्रभ स्वामी
१०. श्री विशालधर स्वामी
११. श्री वज्रधर स्वामी
१२. श्री चन्द्रानन स्वामी
१३. श्री चन्द्रबाहु स्वामी
१४. श्री भुजंग स्वामी
१५. श्री ईश्वर स्वामी
१६. श्री नेमिप्रभ स्वामी
१७. श्री वीरसेन स्वामी
१८. श्री महाभद्र स्वामी
१९. श्री देवयश स्वामी
२०. श्री अजितवीर्य स्वामी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोट— कहीं-कहीं ये नाम दूसरे प्रकार से भी मिलते हैं।

१४. ग्यारह गणधर

१. श्री इन्द्रभूति
२. श्री अग्निभूति
३. श्री वायुभूति
४. श्री व्यक्त
५. श्री सुधर्मा
६. श्री मंडित
७. श्री मौर्यपुत्र
८. श्री अकम्पित
९. श्री अचलभ्राता
१० श्री मेतार्य
११. श्री प्रभास

१५. सोलह महासतियां

१. महासती ब्राह्मी
२. ,, सुन्दरी
३. ,, कौशल्या
४. ,, सीता
५. ,, राजीमती
६. ,, कुन्ती
७. ,, द्रोपदी
८. ,, चन्दनबाला
९. महासती मृगावती
१०. ,, पुष्पचूला
११ ,, प्रभावती
१२. ,, सुभद्रा
१३. ,, दमयन्ती
१४. ,, सुलसा
१५. ,, शिवा
१६. ,, पद्मावती

१६. नौ आचार्यों के नाम

१. आचार्य श्री भीखणजी
२. आचार्य श्री भारीमालजी
३. आचार्य श्री रायचन्दजी
४. आचार्य श्री जीतमलजी
५. आचार्य श्री मघराजजी
६. आचार्य श्री माणकलालजी
७. आचार्य श्री डालचन्दजी
८. आचार्य श्री कालूरामजी
९. आचार्य श्री तुलसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१७. साध्वी-प्रमुखाओं के नाम

१. साध्वी प्रमुखा सरदारांजी
२. साध्वी „ गुलाबांजी
३. साध्वी „ नवलांजी
४. साध्वी „ जेठांजी
५. साध्वी „ कानकंवरजी
६. साध्वी „ झमकूजी
७. साध्वी „ लाडांजी
८. साध्वी „ कनकप्रभाजी

१८. भगवान महावीर के प्रमुख श्रावक

१. आनन्द
२. कामदेव
३. चूलणीपिता
४. सुरादेव
५. चुल्लशतक
६. कुण्डकौलिक
७. सद्दालपुत्र
८. महाशतक
९. नन्दिनीपिता
१०. लेतियापिता।

(उपासकदसा)

१९. परमेष्ठी वंदना

णमो अरहंताणं

वंदना आनन्द पुलकित, विनय नत हो मैं करूं।
एक लय हो एक रस हो, भाव तन्मयता वरूं॥

सहज निज आलोक से भासित स्वयं संबुद्ध हैं।
धर्म तीर्थंकर शुभंकर, वीतराग विशुद्ध हैं॥
गति-प्रतिष्ठा-त्राण दाता, आवरण से मक्त हैं।
देव अर्हन् दिव्य योगज अतिशयों से युक्त हैं॥

णमो सिद्धाणं

बंधनों की शृंखला से, मुक्त शक्ति-स्रोत हैं।
सहज निर्मल आत्मलय में सतत ओतप्रोत हैं॥
दग्धकर भव बीज अंकुर, अरुज अज अविकार हैं।
सिद्ध परमात्मा परम, ईश्वर अपुनरवतार हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

णमो आयरियाणं

अमलतम आचार धारा में स्वयं निष्णात हैं।
दीप सम शत दीप दीपन के लिए प्रख्यात हैं॥
धर्म-शासन के धुरंधर धीर धर्माचार्य हैं।
प्रथम पद के प्रवर-प्रतिनिधि प्रगति में अनिवार्य हैं॥

णमो उवज्झायाणं

द्वादशांगी के प्रवक्ता ज्ञान गरिमा पुंज हैं।
साधना के शान्त उपवन में सुरम्य निकुंज हैं॥
सूत्र के स्वाध्याय में संलग्न रहते हैं सदा।
उपाध्याय महान श्रुतधर, धर्म शासन सम्पदा॥

णमो लोए सव्वसाहूणं

लाभ और अलाभ में सुख-दुःख में मध्यस्थ हैं।
शान्तिमय, वैराग्यमय, आनन्दमय आत्मस्थ हैं॥
वासना से विरत आकृति सहज परम प्रसन्न हैं।
साधना धन साधु अन्तर्भाव में आसन्न हैं॥

२०. पंचपद वंदना

णमो अरहंताणं

परम अर्हता सम्पन्न, चार घनघाती कर्म का क्षय कर अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत शक्ति और आठ प्रातिहार्य—इन बारह गुणों से सुशोभित, चउतीस अतिशय, पैंतीस वचनातिशय से युक्त, धर्मतीर्थ के प्रवर्तक, वर्तमान तीर्थंकर सीमंधर आदि अर्हतों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणति पूर्वक वंदना—तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि।

णमो सिद्धाणं

परम सिद्धि संप्राप्त, अष्टकर्म क्षय कर केवलज्ञान, केवलदर्शन, असंवेदन, आत्मरमण, अटल अवगाहन, अमूर्ति, अगुरुलघु और निरंतराय—इन आठ गुणों से सम्पन्न, परमात्मा, परमेश्वर, जन्म, मरण,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जरा, रोग, शोक, दुःख, दारिद्रय रहित अनंत सिद्धों को विनम्रभाव से पंचांग प्रणति पूर्वक वंदना—तिक्खुत्तो आयाहिणं···

णमो आयरियाणं

परम आचार कुशल, धर्मोपदेशक, धर्मधुरंधर, वहुश्रुत, मेधावी, सत्यनिष्ठ, श्रद्धा-धृति-शक्ति-शांति सम्पन्न, अष्ट गणि-सम्पदा से सुशोभित, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के ज्ञाता, चतुर्विध धर्मसंघ के शास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि एवं छत्तीस गुणों के धारक वर्तमान आचार्य श्री तुलसी आदि आचार्यों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणति पूर्वक वंदना—तिक्खुत्तो आयाहिणं···

णमो उवज्झायाणं

परमश्रुत स्वाध्यायी, धर्मसंघ में आचार्य द्वारा नियुक्त, ग्यारह अंग तथा वारह उपांग के धारक, अध्ययन और अध्यापन में कुशल—इन पचीस गुणों से सुशोभित उपाध्यायों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणति पूर्वक वंदना—तिक्खुत्तो आयाहिणं···

णमो लोए सव्वसाहूणं

अध्यात्म-साधना में संलग्न पांच महाव्रत, पंचेन्द्रिय निग्रह, चार कषाय-विवेक, भाव सत्य, करण सत्य, योग सत्य, क्षमा, वैराग्य, मन-वचन-काय समाहरणता, ज्ञान, दर्शन, चारित्र सम्पन्नता, वेदना और मृत्यु के प्रति सहिष्णुता—इन सत्ताईस गुणों से सुशोभित, परीषह-जयी, प्रासुक एषणीय भोजी, अर्हत् और आचार्य की आज्ञा के आराधक, तपोधन साधु-साध्वियों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणति पूर्वक वंदना— तिक्खुत्तो आयाहिणं···

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२१. अर्हत् वंदना

१ णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

नमन हमारा अरहन्तों को, सिद्धों को आचार्यों को है।
'आगम पुरुष' उपाध्यायों को, और लोक के सब सन्तों को ।।

२. एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावपणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

नमस्कार-पंचक यह पावन, करता सब पापों का नाश।
सभी मंगलों में प्रधान है, प्रकटे भीतर दिव्य प्रकाश ।।

३. जे य बुद्धा अइक्कंता, जे य बुद्धा अणागया।
संती तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा ।।

जितने अर्हत् हुए लोक में, होंगे जितने फिर अरहन्त।
उन सबका आधार शान्ति है, जीवों का जैसे यह जगती ।।

४. से सुयं च मे, अज्झत्थियं च मे—
बंधपमोक्खो तुज्झ अज्झत्थेव।

मैंने सुना और आत्म-अनुभव से जाना।
बन्धन मुक्ति तुम्हारे अपने ही भीतर है ।।

५. पुरिसा ! तुममेव तुमं मित्तं।
किं बहिया मित्तमिच्छसि ?

पुरुष ! स्वयं का मित्र स्वयं तू।
फिर क्या बाहर मित्र खोजता ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६. पुरिसा ! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ,
एवं दुक्खा पमोक्खसि ।
पुरुष ! स्वयं का ही निग्रह कर ।
ऐसे दुःख मुक्त होगा तू ॥

७. पुरिसा ! तुमंसि नाम सच्चेव,
जं हंतव्वं ति मन्नसि ।
पुरुष ! जिसे हंतव्य मानता ।
वह तू ही है केवल तू ही ॥

८. सव्वे पाणा ण हंतव्वा—
एस धम्मे धुवे, णिइए सासए ।
वध्य नहीं है कोई भी प्राणी इस जग का ।
यही अहिंसा धर्म नित्य है, शाश्वत ध्रुव है ।

९. पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि ।
पुरुष ! सत्य का ही अनुचिन्तन कर अनुशीलन ।

१०. सच्चं भयवं
सत्य स्वयं भगवान रूप है ।

११. सच्चं लोयम्मि सारभूयं ।
सत्य लोक में सारभूत है ।

१२. इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं ।
निर्ग्रन्थों का यह प्रवचन ही परम सत्य है ।

१३. उट्ठिए णो पमायए ।
जाग गए हो, अब मत करना कभी प्रमाद ।

१४. सव्वतो पमत्तस्स भयं,
सव्वतो अप्पमत्तस्स णत्थि भयं ।
जो प्रमत्त है, उसको सभी ओर से भय है ।
अप्रमत्त को किसी ओर से भय न सताता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१५. समया धम्म मुदाहरे मुणी ।
समता धर्म बताया मुनि ने ।

१६. लाभालाभे सुहे-दुक्खे, जीविए-मरणे तहा ।
समो निंदा-पसंसासु, तहा माणावमाणओ ।।

लाभ-अलाभ, दुःख-सुख में सम, जीवन-मरण मान-अपमान ।
स्तुति-निन्दा—इन सब द्वन्द्वों में सम रहता मुनि प्रज्ञावान ।।

१७. अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ ।
वासीचंदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ।।

ऐहिक और पारलौकिक विषयों से रहे अनिश्रित ।
कोई करे प्रहार वसौले से या चन्दन-चर्चित ।।
मिले मनोगत भोजन, भूखा रहना पड़े किसी क्षण ।
इन सबमें सम रहना ही समता का लक्षण ।।

१८. अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ।।

आत्मा ही अपने सुख-दुख की कर्ता और विकर्ता ।
वही मित्र जो सुप्रवृत्त है, दुष्प्रवृत्त रिपु बनती ।।

१९. अप्पा णई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ।।

वैतरणी सरिता आत्मा ही, आत्मा ही है कूट शाल्मली ।
है आत्मा ही कामधेनु यह आत्मा ही नन्दन वन है ।।

२०. जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ।।

जो दस लाख शत्रुओं पर भी, रण में विजय प्राप्त कर लेता ।
एक जीतता निज आत्मा को, परम विजय उसकी कहलाती ।।

२१. खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षमादान देता हूं सबको, क्षमा मुझे दें सारे जीव।
सब जीवों से मैत्री मेरी, नहीं किसी से मेरा वैर॥

२२. अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

मंगलमय मंगल हैं अर्हन सिद्ध साधु जन हैं मंगल।
धर्म केवली-भाषित मंगल, ये चारों ही हैं मंगल॥

२३. अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

परमोत्तम लोकोत्तम अर्हन, सिद्ध साधु जन लोकोत्तम।
धर्म केवली-भाषित उत्तम, ये चारों ही लोकोत्तम॥

२४. अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

अर्हंतों की और सिद्धों, साधुओं की शरण में।
जा रहा हूं केवली-भाषित धर्म की शरण में॥
स्वस्थ मन से और वाणी, कर्म से अभिवन्दना।
करूं मैं नित अर्हंतों की भावभीनी वन्दना॥

भाव-भीनी वन्दना भगवान चरणों में चढ़ाएं।
शुद्ध ज्योतिर्मय निरामय रूप अपने आप पाएं॥

ज्ञान से निज को निहारें, दृष्टि से निज को निखारें।
आचरण की उर्वरा में, लक्ष्य तरुवर लहलहाए॥१॥

सत्य में आस्था अचल हो, चित्त संशय से न चल हो।
सिद्ध कर आत्मानुशासन, विजय का संगान गाएं॥२॥

बिन्दु भी हम सिन्धु भी हैं, भक्त भी भगवान भी हैं।
छिन्न कर सब ग्रन्थियों को, सुप्त मानस को जगाएं॥३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म है समता हमारा, कर्म समतामय हमारा।
साम्य योगी बन हृदय में, स्रोत समता का बहाएं ॥४॥

लय : लक्ष्य है ऊंचा हमारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१. मंगल-स्मरण

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गोतमो गणी।
मंगलं स्थूलिभद्राद्याः जैनधर्मोस्तु मंगलम् ॥१॥

सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याण-कारणम्।
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥२॥

मंगलं मतिमान् भिक्षुः, मंगलं भारमल्लकः।
मंगलं रायचन्द्राद्याः, मंगलं तुलसी गुरुः ॥३॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धि-स्थिताः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा, रत्न-त्रयाराधकाः।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥४॥

ब्राह्मी चन्दनबालिका, भगवती राजीमती द्रौपदी।
कौशल्या च मृगावती च सुलसा, सीता सुभद्रा शिवा।
कुन्ती शीलवती नलस्य दयिता, चूला प्रभावत्यपि।
पद्मावत्यपि सुन्दरी प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥५॥

२. मंत्र एवं स्तोत्र

१. पार्श्व-स्तुति मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री-चिन्तामणि-कामधेनु-कल्पवृक्ष-पुरुषादानी श्री पार्श्वनाथ-धरणेन्द्र-पद्मावती-सहिताय मम मनो वांछितं पूरय पूरय-जय-विजय करणाय नमः[1]

---

१. उपवास सहित पोष वदी १० को यह जप प्रारम्भ किया जाता है। पहले २१ दिन तक इसकी एक-एक माला फेरें। फिर प्रतिदिन २७ बार जप करना चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२. ग्रह, विघ्न निवारक मन्त्र —

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं—चन्द्र और शुक्र ग्रह निवारक
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं—सूर्य और मंगल ग्रह निवारक
ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं—वृहस्पति ग्रह निवारक
ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं—बुद्ध ग्रह निवारक
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं[1]—शनि, राहु, केतु ग्रह निवारक।

३. सहज मंत्र—

ॐ अ-सि-आ-उ-सा नमः[2]

४. सर्व विघ्न निवारक मंत्र—

नमिऊण असुरसुर-गरुल-भुयगपरिवंदिए गयकिलेसे।
अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाए सव्वसाहू य ॥

५. चउवीसत्थव मंत्र—

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजर-मरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
कित्तिय वंदिय मए, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥

---

१. पहले २१ दिन १०-१० माला फेरें। फिर प्रतिदिन एक एक माला का जप करें। कायोत्सर्ग की मुद्रा में खड़े-खड़े प्रतिदिन ८ नवकार मंत्र का जप अत्यन्त लाभदायक है।

२. यह नमस्कार महामत्र के पांचों पदों का वाचक मंत्र है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागर-वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु[1] ॥७॥

६. आध्यात्मिक विकास मंत्र—

	स्थान	रंग
चंदेसु निम्मलयरा	ज्योति केन्द्र—	श्वेत—चन्द्रमा की भांति।
आइच्चेसु अहियं पयासयरा	दर्शनकेन्द्र—	लाल—बाल सूर्य की भांति।
सागर-वर-गंभीरा	विशुद्धि केन्द्र—	नीला—समुद्र की भांति।

सिद्धा सिद्धिं मम मनोवांछितं कुरु-कुरु-स्वाहा।[2]

७. गोतम-स्तुति-सुख शांतिवर्द्धक मंत्र—

ॐ नमो भगवतो गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण-महाणसस्स भगवन्! मम मनोरथं पूरय-पूरय स्वाहा।

८. संकट निवारक मंत्र—

ॐ अ-भी-रा-शि-को नमः।[3]

९. आद्यक्षर-मंत्र—

भि० भा० रा० ज० म० मा० डा० का० तु०।
सद्गुरु-नवकं सदा पुनातु॥

---

१. यह पाठ २४ तीर्थंकरों की स्तुति रूप में है। इस पाठ का कम से कम ७ बार रात को सोते समय ध्यान करना चाहिए। इसके ध्यान से स्वप्न नहीं आते। शासन-सेवक सभी देव और देवियां इससे प्रसन्न रहते हैं। इसकी पूरी माला फेरी जाए तो विशेष लाभ होता है।

२. मानसिक संकल्प पुष्ट करते हुए २१ दिन एक-एक माला फेरें। फिर प्रतिदिन २१ बार जप करें।

३. इस मंत्र की माला से भूत प्रेतजनित कष्ट बहुत जल्दी दूर होता है। यह मंत्र आज भी चमत्कार दिखाता है। इसमें पांच घोर तपस्वियों की स्तुति है—
   १. अ—अमीचंदजी
   २. भी—भीमराजजी
   ३. रा—रामसुखजी
   ४. शि—शिवजी
   ५. को—कोदरजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१०. चामत्कारिक मन्त्र —

ॐ भिक्षु[1]

११. कषाय विजय मन्त्र—

एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस ।
दसहा हु जिणित्ताणं सव्व सत्तू जिणामहं ।।

१२. ब्रह्मचर्य विकास मन्त्र—

देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खसकिन्नरा ।
बंभयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करेंति तं ।।

१३. ज्ञान वृद्धि मन्त्र—

ॐ ऐं ॐ

१४. नियंत्रण शक्तिवर्धक मन्त्र—

ॐ ह्रीं अर्हं नमः

१५. निरन्तर जपने योग्य मन्त्र—

अर्हं[2]

१. यह मंत्र श्रद्धावान् लोगों के लिए महामंत्र का कार्य करता है। इसका सवा लाख जप करने से अवश्य चमत्कार होता है। प्रारंभ भादवा सुदी तेरस या दीपावली से करें।

२. श्वास लेते समय अर् एवं छोड़ते समय हं का जप करें।

नोट —

जप साधना विधि

१. जप अनुष्ठान के लिए दृढ़ आस्था और आभ्यन्तर पवित्रता की अत्यन्त आवश्यकता है।

२. जप-काल में सीमित द्रव्य, एकासन, आयम्बिल, उपवास आदि अवश्य होने चाहिए।

३. मन की स्थिरता के लिए नियत आसन में बैठकर (पद्मासन, सिद्धासन, सुखासन) नासाग्र या भृकुटि पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

४. जप-काल में नियत समय (पश्चिम रात्रि, प्रातः शौच निवृत्ति के बाद या पूर्व रात्रि) तथा नियत स्थान भी अपना स्वतन्त्र महत्त्व रखता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३. उपसर्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥१॥
विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावन्ति न दुक्ख-दोहग्गं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥
इय संथुओ महायस! भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद[1] ॥५॥

४. श्री पैंसठिया यंत्र और छन्द

२२	३	९	१५	१३
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

---

१. यह भद्रबाहु स्वामी द्वारा रचित महाप्रभावक मन्त्र है। इसका साधन पोष बदी १० से आरम्भ होता है। इसका बीजमंत्र है—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण पास विसहर
वसह जिण फुलिंग ह्रीं श्रीं नमः।

प्रतिदिन इसकी एक माला पद्मासन में बैठकर पूर्वोत्तर दिशा में फेरें एवं "उपसर्गहर स्तोत्र" का २७ बार पाठ करें। २७ दिन तक यह क्रम चालू रखें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री नेमीश्वर संभव स्वाम,
सुविधि धर्म शान्ति अभिराम,
अनन्त मुव्रत नमिनाथ सुजाण,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥१॥

अजित नाथ चन्दा प्रभु धीर,
आदीश्वर सुपार्श्व गंभीर,
विमल नाथ विमल जग-भाण,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥२॥

मल्लिनाथ जिन मंगल रूप,
पंचबीस धनु सुन्दर स्वरूप,
श्री अरनाथ नमूं वर्धमान,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥३॥

सुमति पद्म प्रभू अवतंस,
वासुपूज्य शीतल श्रेयांस,
कुथु पार्श्व अभिनन्दन भाण,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥४॥

इण परे श्री जिनवर संभारिए,
दुःख दारिद्रय विघ्न निवारिए,
पच्चीसे पैंसठ परमाण,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥५॥

इण भगता दुःख नावे कदा,
जो निज पासे राखै सदा,
धरिए पंचतणुं मन ध्यान,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥६॥

श्री जिनवर नामे वांछित मिले,
मन वांछित सहु आशा फले,
धर्मसिंह मुनि नाम निधान,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५. घंटाकर्ण मंत्र

ॐ घंटाकर्णो महावीरः सर्वव्याधि-विनाशकः।
विस्फोटकभयं प्राप्ते, रक्ष रक्ष महाबलः ॥१॥

यत्र त्वं तिष्ठसे देव ! लिखितोऽक्षर-पंक्तिभिः।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वातपित्तकफोद्भवाः ॥२॥

तत्र राजभयं नास्ति, यान्ति कर्णेजपात्क्षयम्।
शाकिनी-भूतवेताला, राक्षसाः प्रभवन्ति नो ॥३॥

नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दश्यते।
अग्नि चौरभयं नास्ति, ॐ ह्रीं श्रीं घंटाकर्ण !
नमोस्तु ते ॐ नरवीर ! ठः ठः ठः स्वाहा[1] ॥४॥

६. श्री वज्रपंजर स्तोत्र

परमेष्ठि-नमस्कारं, सार नवपदात्मकम्।
आत्मरक्षाकरं वज्रपंजराभं स्मराम्यहम् ॥१॥

ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम्।
ॐ नमो सव्वसिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् ॥२॥

ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायिनी।
ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥३॥

ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे।
एसो पंच णमुक्कारो, शिलावज्रमयीतले ॥४॥

सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिराङ्गारखातिका ॥५॥

स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं।
वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥६॥

---

१. घंटाकर्ण मंत्र का २१ बार जप करने से राजभय, चोरभय, अग्नि और सर्प का भय दूर होता है तथा सब प्रकार की भूत-प्रेत आदि बाधाएं भी दूर होती हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी।
परमेष्ठि-पदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥७॥

यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा।
तस्य न स्यात् भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥८॥

७. महावीराष्टक स्तोत्र

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्-साक्षी मार्गप्रकटनपरो भानुरिव योः
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥१॥

अताम्रं यच्चक्षुःकमलयुगलं स्पन्दरहितं,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाऽभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥२॥

नमन्नाकेन्द्राली - मुकुट - मणिभा - जालजटिलं,
लसत्पादाम्भोजद्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्वालाशान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥३॥

यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह,
क्षणादासीत् स्वर्गी गुणगणसमृद्धः सुखनिधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव-सुख-समाजं किमु तदा,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥४॥

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर्, ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माऽप्येको नृपतिवर-सिद्धार्थ-तनयः,
अजन्माऽपि श्रीमान् विगत-भवरागोऽद्भुतगतिर्,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥५॥

यदीया वाग्-गंगा विविध नय-कल्लोल-विमला,
वृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां यां स्नपयति।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इदानीमप्येषा बुधजन-मरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥६॥

अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी कामसुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः।
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशमपदराज्याय स जिनः
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥७॥

महामोहातंक - प्रशमनपराऽऽकस्मिकभिषग्,
निरापेक्षो बन्धुर् विदितमहिमा मंगलकरः।
शरण्यः साधूनां भव-भयभृतामुत्तमगुणी,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥८॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या भागेन्दुना कृतम्।
य पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम् ॥

८. भिक्षु अष्टकम्

(युवाचार्य महाप्रज्ञ)

अकम्पः संकल्पः क्वचिदपि न केनापि चलितः,
न चित्ते चांचल्यं न च विपथगामीन्द्रियगणः।
समं सोढा गालिः क्वचन घनमुष्टेः प्रहरणं,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे ॥१॥

न रागो न द्वेषो घटितघटनासु प्रतिकृतः,
विरोधः सद्भावे परिणतिमुपागात् प्रतिपदम्।
न लेशः क्लेशानां समजनि निमेषं सहचरः,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे ॥२॥

अलब्धेऽप्याहारे सुमतिरचलन्नो क्षणमपि,
न लब्धं सुस्थानं तदपि पथि नीते स्थिरमतिः।
न कष्टं तत्कष्टं भवति यदि चित् स्पष्टमुदिता,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे ॥३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सदा स्वच्छो भावो जिनवचनभावैरपमलः,
कृतादर्शा प्रज्ञा मतिविभवमाक्रम्य सुगता।
न चेर्ष्या नो निन्दा गहनतमनिष्ठा स्वचरिते,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे ॥४॥

न सा काम्या बुद्धिर्भवति खलु या बंधनिरता,
प्रशस्यां तां मन्ये भवति च यतश्चिद् विकसिता।
स्वचैतन्ये निष्ठा प्रशमसुखवृष्टेरनुभवः,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे ॥५॥

ज्वरो यस्याध्वानं सततमविगानं विहितवान्,
निराशा संन्यस्ता सरिति रवितापेन सुतराम्।
प्रकाशः संप्राप्तो गहनतिमिरे चैत्यनिलये,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे ॥६॥

अगम्यं यन्नाम प्रबलतपसा संचितयशो,
न शेषाः संक्लेशा विलयमुपयान्ति स्मरणतः।
नयन् ॐ ऐं ॐ ॐ अमलमनसार्हं सवलयं,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे ॥७॥

मतिः सिद्धा शुद्धा भवतु प्रतिबुद्धा प्रतिपलं,
मनो हित्वा भ्रान्तिं व्रजतु सुखदां शांतिममलाम्।
सदा ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्फुरतु नितरां भावनिचये,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे ॥८॥

९. रत्नाकर पंचविंशिका

श्रेयः श्रियां मंगलकेलिसद्म !
नरेन्द्र-देवेन्द्र-नतांघ्रिपद्म !
सर्वज्ञ ! सर्वातिशय ! प्रधान !
चिरंजय ! ज्ञान-कला निधान ॥१॥

जगत्त्रयाधार ! कृपावतार !
दुर्वार-संसार-विकार-वैद्य !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री वीतराग ! त्वयि मुग्धभावाद्,
विज्ञ ! प्रभो ! विज्ञपयामि किंचित् ॥२॥
किं बाललीला-कलितो न बालः,
पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः ?
तथा यथार्थं कथयामि नाथ !
निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥३॥

दत्तं न दानं परिशीलितं च
न शालि-शीलं, न तपोऽभितप्तम् ।
शुभो न भावोऽप्यभवद भवेऽस्मिन्,
विभो ! मया भ्रान्तमहो मुधैव ॥४॥

दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो,
दुष्टेन लोभाख्य-महोरगेण ।
ग्रस्तोऽभिमानाऽजगरेणमाया-
जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजेत् त्वाम् ॥५॥

कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह,
लोकेऽपि लोकेश ! सुखं न मेऽभूत् ।
अस्मादृशां केवलमेव जन्म,
जिनेश ! जज्ञे भव-पूरणाय ॥६॥

मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्त !
त्वदास्यपीयूष-मयूखलाभात् ।
द्रुतं महानन्दरसं कठोर-
मस्मादृशां देव ! तदश्मतोऽपि ॥७॥

त्वत्तः सुदुष्प्रापमिदं मयाप्तं
रत्नत्रयं भूरि-भव-भ्रमेण ।
प्रमाद-निद्रावशतो गतं तत्
कस्याग्रतो नायक ! पूत्करोमि ? ॥८॥

वैराग्य-रंगः पर-वंचनाय,
धर्मोपदेशो जन-रंजनाय ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वादाय विद्याध्ययनं च मेऽभूत्,
कियद् ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश ! ॥९॥

परापवादेन मुखं सदोषं,
नेत्रं परस्त्रीजन-वीक्षणेन ।
चेतः परापाय-विचिन्तनेन,
कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहम् ? ॥१०॥

विडम्बितं यत् स्मर-घस्मरार्ति-
दशावशात् स्वं विषयान्धलेन ।
प्रकाशितं तद् भवतो ह्रियैव,
सर्वज्ञ ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि ॥११॥

ध्वस्तोऽन्यमंत्रैः परमेष्ठि-मंत्रः,
कुशास्त्रवाक्यैर्निहतागमोक्तिः ।
कर्तुं वृथा-कर्म कुदेव-संगा-
दवांछि ही नाथ ! मतिभ्रमो मे ॥१२॥

विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवन्तं,
ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः ।
कटाक्ष-वक्षोज-गभीर-नाभि-
कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः ॥१३॥

लोलेक्षणावक्त्र-निरीक्षणेन,
यो मानसे रागलवो विलग्नः ।
न शुद्ध-सिद्धान्त-पयोधि-मध्ये,
धौतोप्यगात् तारक ! कारणं किम् ॥१४॥

अंग न चंगं न गणो गुणानां,
न निर्मलः कोऽपि कला-विलासः ।
स्फुरत्प्रभा न प्रभुता च कापि,
तथाप्यहंकार-कदर्थितोऽहम् ॥१५॥

आयुर्गलत्याशु न पाप-बुद्धिर्
गतं वयो नो विषयाभिलाषः ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यत्नश्च भैषज्य-विधौ न धर्मे,
स्वामिन् ! महामोह-विडम्बना मे ॥१६॥

नात्मा न पुण्यं न भवो न पापं,
मया विटानां कटुगीरपीयम् ।
अधारि कर्णे त्वयि केवलार्के,
परिस्फुटे सत्यपि देव ! धिग् माम् ॥१७॥

न देवपूजा न च पात्रपूजा,
न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ।
लब्ध्वाऽपि मानुष्यमिदं समस्तं,
कृतं मयाऽरण्य-विलापतुल्यम् ॥१८॥

चक्रे मयाऽसत्स्वपि कामधेनु-
कल्पद्रु - चिन्तामणिषु स्पृहार्तिः ।
न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि,
जिनेश ! मे पश्य विमूढभावम् ॥१९॥

सद्भोगलीला न च रोगकीला,
धनागमो नो निधनागमश्च ।
दारा न कारा नरकस्य चित्ते,
व्यचिन्ति नित्यं मयकाऽधमेन ॥२०॥

स्थितं न साधोर् हृदि साधुवृत्तात्,
परोपकारान्न यशोऽर्जितं च ।
कृतं न तीर्थोद्धरणादिकृत्यं,
मया मुधा हारितमेव जन्म !॥२१॥

वैराग्यरंगो न गुरूदितेषु,
न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः ।
नाध्यात्मलेशो मम कोऽपि देव !
तार्यः कथंकारमयं भवाब्धिः ? ॥२२॥

पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य-
मागामि-जन्मन्यपि नो करिष्ये ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदीदृशोहं मम तेन नष्टा,
भूतोद्भवद्भावि-भवत्रयीश ! ॥२३॥

किं वा मुधाऽहं बहुधा सुधाभुक्,
पूज्य ! त्वदग्रे चरितं स्वकीयम् ।
जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप-
निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ? ॥२४॥

दीनोद्धार-धुरंधरस्त्वदपरो,
नास्ते मदन्यः कृपा-
पात्रं नाऽत्र जनो जिनेश्वर !
तथाप्येतं न याचे श्रियम् ।
किंत्वर्हन्निदमेव केवलमहो,
सद्बोधिरत्नं शिवं ।
श्री-रत्नाकर-मंगलैकनिलय !
श्रेयस्करं प्रार्थये ॥२५॥

१०. परमात्म-द्वात्रिंशिका

(आचार्य अमितगति द्वारा विरचित)

सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
मध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देव ! ॥१॥

शरीरतः कर्तुं मनन्तशक्ति,
विभिन्नमात्मानमपास्तदोषम् ।
जिनेन्द्र ! कोषादिव खड्गयष्टिं,
तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः ॥२॥

दुःखे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे,
योगे वियोगे भवने वने वा ।
निराकृताशेषममत्वबुद्धेः
समं मनो मेऽस्तु सदाऽपि नाथ ! ॥३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुनीश : लीनाविव कीलिताविव,
स्थिरौ निखाताविव बिम्बिताविव,
पादौ त्वदीयौ मम तिष्ठतां सदा,
तमो-धुनानौ - हृदि दीपकाविव ॥४॥

एकेन्द्रियाद्या यदि देव ! देहिनः,
प्रमादतः संचरता यतस्ततः ।
क्षता विभिन्ना मलिता निपीडिता,
ममास्तु मिथ्या दुरनुष्ठितं तदा ॥५॥

विमुक्तिमार्ग-प्रतिकूलवर्तिना,
मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया ।
चारित्र-शुद्धेर्यदकारि लोपनं,
तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं विभो ! ॥६॥

विनिन्दनालोचन-गर्हणैरहं,
मनोवचः काय-कषायनिर्मितम् ।
निहन्मि पापं भव-दुःख-कारणं,
भिषग् विषं मंत्रगुणैरिवाऽखिलम् ॥७॥

अतिक्रमं यं यमपि व्यूतिक्रमं,
जिनातिचारं सुचरित्रकर्मणः ।
व्यधामनाचारमपि प्रमादतः,
प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये ॥८॥

क्षतिं मनःशुद्धिविधेरतिक्रमं,
व्यतिक्रमं शीलवृतेर्विलंघनम् ।
प्रभोऽतिचारं विषयेषु वर्तनं,
वदन्त्यनाचार-मिहातिसक्तताम् ॥९॥

यदर्थमात्रा-पद-वाक्यहीनं,
मया प्रमादात् यदि किंचनोक्तम् ।
तन्मे क्षमित्वा विदधातु देवी,
सरस्वती केवल-बोधिलब्धिम् ॥१०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोधिः समाधिः परिणामशुद्धिः,
स्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्यसिद्धिः।
चिन्तामणिं चिन्तितवस्तुदाने,
त्वां वन्दमानस्य ममास्तु देवि ! ॥११॥

यः स्मर्यते सर्व-मुनीन्द्र-वृन्दै-
र्यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः।
यो गीयते वेद-पुराणशास्त्रैः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१२॥

यो दर्शन-ज्ञान-सुख-स्वभावः,
समस्त-संसार-विकार-बाह्यः।
समाधिगम्यः परमात्म-संज्ञः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१३॥

निषूदते यो भव-दुःखजालं,
निरीक्षते यो जगदन्तरालम्।
योऽन्तर्गतो योगि-निरीक्षणीयः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१४॥

विमुक्तिमार्ग-प्रतिपादको यो,
यो जन्म-मृत्युव्यसनाद् व्यतीतः।
त्रिलोक-लोकी सकलोऽकलंकः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१५॥

क्रोडीकृताशेष-शरीरि-वर्गा,
रागादयो यस्य न सन्ति दोषाः।
निरीन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१६॥

यो व्यापको विश्वजनीन-वृत्तिः,
सिद्धो विबुद्धो धुतकर्मबन्धः।
ध्यातो धुनीते सकलं विकारं,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न स्पृश्यते कर्मकलंकदोषैर्,
यो ध्वान्तसंघैरिव तिग्मरश्मिः।
निरंजनं नित्यमनेकमेकं,
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥१८॥

विभासते यत्र मरीचिमालि-
न्यविद्यमाने भुवनावभासी।
स्वात्मस्थितं बोधमय-प्रकाशं,
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥१९॥

विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं,
विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तम्।
शुद्धं शिवं शान्तमनाद्यनन्तं,
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥२०॥

येन क्षता मन्मथ-मान-मूर्च्छा-
विषाद-निद्रा-भय-शोक-चिन्ताः।
क्षयानलेनेव तरु-प्रपंचस्,
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥२१॥

न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी,
विधानतो नो फलको विनिर्मितः।
यतो निरस्ताक्ष-कषाय-विद्विषः,
सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः ॥२२॥

न संस्तरो भद्र ! समाधि-साधनं
न लोकपूजा न च संघमेलनम्।
यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवाऽनिशं,
विमुच्य सर्वामपि बाह्यवासनाम् ॥२३॥

न सन्ति बाह्या मम केचनार्था
भवामि तेषां न कदाचनाऽहम्।
इत्यं विनिश्चित्य विमुच्य बाह्यं,
स्वस्थः सदा त्वं भव भद्र ! मुक्त्यै ॥२४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मानमात्मन्यवलोक्यमानस्,
त्वं दर्शनज्ञानमयो विशुद्धः ।
एकाग्रचित्तः खलु यत्र तत्र,
स्थितोऽपि साधुर्लभते समाधिम् ॥२५॥

एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा,
विनिर्मलः साधिगमस्वभावः ।
बहिर्भवाः सन्त्यपरे समस्ता,
न शाश्वताः कर्मभवाः स्वकीयाः ॥२६॥

यस्यास्ति नैक्यं वपुषाऽपि सार्द्धं,
तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः ?
पृथक् कृते चर्मणि रोमकूपाः,
कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ॥२७॥

संयोगतो दुःखमनेकभेदं,
यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी ।
ततस्त्रिधाऽसौ परिवर्जनीयो,
यियासुना निर्वृतिमात्मनीनाम् ॥२८॥

सर्वं निराकृत्य विकल्प-जालं,
संसार-कान्तार-निपातहेतुम् ।
विविक्तमात्मानमवेक्षमाणो,
निलीयसे त्वं परमात्मतत्त्वे ॥२९॥

स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा,
फलं तदीयं लभते शुभाशुभम् ।
परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं,
स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा ॥३०॥

निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो,
न कोऽपि कस्याऽपि ददाति किंचन ।
विचारयन्नेवमनन्यमानसः,
परो ददातीति विमुञ्च शेमुषीम् ॥३१॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यैः परमात्माऽमितगतिवन्द्यः,
सर्वविविक्तो भृशमनवद्यः।
शश्वदधीतो मनसि लभन्ते,
मुक्तिनिकेतं विभववरं ते ॥३२॥

११. चतुर्विंशति-गुण-गेय-गीतिः

(आचार्य तुलसी)

[1]अयि ! प्रथमाप्त ! समाप्त-समक्रिय !
नाभितनुद्भव ! भुवनपते !
वृषभस्वामिन्नन्तर्यामिन् !
देहि निजाश्रयममितमते !
प्रथम-जिनेश्वर ! गुरुतरभक्त्या,
तव चरणस्मरणं विदधे।
कुरु-कुरु करुणामपहर विपदं,
देहि शिवास्पदममृतनिधे ! ॥१॥ध्रुपदम्॥

जितशत्रोर्विजयायाः सूनुः,
सिद्धस्त्रिजगत्यजितस्त्वम्।
नाम्नाप्यजितो धाम्नाप्यजितः,
स्थाम्नाप्यजितोऽस्यजितस्त्वम् ॥२॥ अजित जिनेश्वर !

कार्यमसम्भवमपि तव कृपया,
सम्भव ! सम्भवतामयते।
तर्हि भवाब्धेर्मे निस्तरणं,
तव कृपया को विस्मयते ॥३॥ सम्भव जिनवर !

चिरमभिनन्दय मामभिनन्दन !
संवर-नन्दन ! सिद्धि-सखे !
भगवंस्त्वमसि सहायो भविनां,
जाते चेतसि भव-विमुखे ॥४॥ अभिनन्दन जिन !

---

१. लय : प्रभाती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तव जननी-जठर-स्थित-सुमतेः,
शिशुरपि निज-मातुर्मिलितः ।
मह्यमपीश ! समर्पय सुमतिं,
शिव-मिलितः स्यां शीघ्रमितः ॥५॥ सुमति जिनेश्वर!

तव संज्ञार्धमवाप्य स्वामिन् !
पङ्केरुहमृषिणोपमितम् ।
किन्त्वहकं तां पूर्णां प्राप्य,
त्वत्तामभिलप्स्ये त्वरितम् ॥६॥ पद्मप्रभजिन !

देहि सुपार्श्व ! सुपार्श्वमहो ते,
ज्ञानाद्यमित-गुणोपचितम् ।
राग-द्वेष-विशेष-विरहितं,
महितं मनुजैर्मघवनुतम् ॥७॥ सुपार्श्व-जिनवर !

चन्द्रस्त्वमसि किलाष्टमजिनवर !
न क्षयमेषि न वृद्धिमिति ।
वृद्धि-क्षयवानयमपि चंद्रो,
नामैकत्वे विषमगतिः ॥८॥ चन्द्रप्रभजिन !

तव सुविधे ! साविध्यमुपासितु-
मभिधावति बत मम हृदयम् ।
केथमथ फलितार्थं प्रविलोके,
विधिमुपदिश विज्ञानमयम् ॥९॥ सुविधि-जिनेश्वर !

शीतल-शीतलताग्रे कीदृक्,
शशि-मलयजयोः शीतलता ।
कुट्टितकांचन-काञ्चनताग्रे,
यादृक् पित्तल-पित्तलता ॥१०॥ शीतल-जिनवर !

श्रेयांसे जगदेकश्रेयसि,
श्रेयोऽर्थ्यश्रेयस्तनुजान् ।
गजाननाद्यान् विकृताकारान्,
ध्यायेन्मुधा मनुज-दनुजान् ॥११॥ श्रेयांस-जिनवर !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वसुनृप-वेश्मनि वासुपूज्य-
नाम्ना वसुमत्यामवतीर्णः।
अविदित्वा वसु हित्वा जगतीं,
भव-जलराशिं निस्तीर्णः ॥१२॥ वासुपूज्य-जिन !

विमल-विमलतामहमुपयाचे,
रचिताञ्जलिरतिहृष्टमतिः।
श्रुत्वा सनतिं विनतिं विभुवर !
कार्या करुणा दृग् महती ॥१३॥ विमल-जिनेश्वर!

ज्ञानाद् दृष्टि-गुणात्त्वमनन्तो,
नाम्नानन्तो युक्तमिति।
किन्त्वाकाशं शून्यमनन्तं,
कथमिति मान्या कविभणितिः ॥१४॥ अनन्त-जिनेश्वर!

धर्म ! यया चतुरङ्गे धर्मे
प्रसरेत् मे प्रतिभा प्रचुरम्।
दर्शय दर्शय तामिह दृष्टिं,
वर्षय वाक्यममृतमधुरम् ॥१५॥ धर्म-जिनेश्वर !

शान्ति-जिनेश ! समर्पय शान्तिं,
कलुषकदर्थित-मद्-हृदये ।
व्यर्थय विदित-मथार्धि, व्याधिं,
सार्थय सततं सुकृतमये ! ॥१६॥ शान्ति-जिनेश्वर !

कुन्थो ! तव चरणाब्जनिषेवी,
भ्रमरोस्मीति मया वाच्यम्।
ओमसि ओमसि एवमुरीकुरु,
नातः परतोऽभ्युपयाच्यम् ॥१७॥ कुन्थु-जिनेश्वर !

त्वरितं तारय तारय तारक !
मामरनाथ! जिनेश्वर ! रे !
तवशरणागतभवनतमस्तक-
मेतं प्रोद्धर प्रोद्धर रे ॥१८॥ श्रीअर-जिनवर !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अङ्गीकृत्य स्त्रीत्वं मल्ले !
दर्शितवानिति नयसरणिम्।
आत्मोद्धरणे स्त्रीपुरुषाणां,
साम्यमतः कुरुतां करणीम् ॥१९॥ मल्लिजिनेश्वर !

सुव्रतनाथ ! सनाथय सहसा,
मादृगशरणं धृतचरणम्।
भवदन्यं कं शरणं मन्ये,
त्रोटय मे कर्मावरणम् ॥२०॥ मुनिसुव्रतजिन !

नमो नमस्ते नमिपरमात्म-
न्नविकाराय निराकृतये।
सर्वज्ञाय शिवाय भगवते,
चिन्मयरूपायामृतये ॥२१॥ श्रीनमिजिनवर !

त्वां नेमीश ! समुद्र-शिवा-सुत !
ध्येयधिया ध्यायन् ध्यायन्।
स्वात्मन्यवलोके रममाणं,
तद्वद्-गुण-गाथां गायन् ॥२२॥ नेमिजिनेश्वर !

पार्श्वय पार्श्वय पार्श्व-प्रभुवर !
मामतिदूरे स्थितवन्तम्।
अयस्कान्त इव द्रुतमाकर्षय,
दर्शय दर्शय जगदन्तम् ॥२३॥ पार्श्व-जिनेश्वर !

अयि ! जगदेकवीर ! वीरेश्वर !
त्रिशलानन्दन ! तीर्थपते !
त्रिकरण-शुद्धया त्वामभिवन्दे,
स्तुति-विषयोऽसि न मेऽल्पमतेः ॥२४॥ वीर-जिनेश्वर !

गोतमादिगणभृतां श्रीमतां,
चरणाम्भोज-परागपराम्।
मधुकरतां गुण-परिमल-निरतां,
लप्स्ये हित्वा कृतिमपराम् ॥२५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'प्राप्तानन्दोऽहं ध्यायन् धर्माचार्यम्।
दुष्कृत-संदोहं, सपदि भिनद्मि विकार्यम् ॥ध्रुपदम्॥

धर्मधुरीण ! परमपथगामिन् !
स्वामिन् ! श्रीदैपेय !
मा विस्मर मामादृतचरणं,
धृतशरणं श्रद्धेय ! ॥२६॥ प्राप्तानन्दो हं

अये ! भारमल ! विमल-विभान्वित !
सतताध्यात्मरताशय !
भिक्षोर्द्वैतीयीक-पदाश्रित !
मामनिशं प्रोल्लासय ॥२७॥ प्राप्तानन्दोऽहं

ब्रह्मचर्य-चरितेन निजेन,
प्रमथितमन्मथराज !
रायचन्द्र ! गणिराज ! निवाजय,
मामनिशं निर्व्याज ॥२८॥ प्राप्तानन्दोऽहं

जय ! जयताज्जय जगतामीश्वर !
त्वं साक्षाज्जिनमूर्तिः।
तव गुणगाने भवति विचित्रा,
मामकवदन-स्फूर्तिः ॥२९॥ प्राप्तानन्दोऽहं

जय-पट्टासीनं गुणपीनं,
शिवशर्मैकनिदानम्।
श्रीमधवानं ध्यायन् विध्यति,
प्राणी कलुषवितानम् ॥३०॥ प्राप्तानन्दोऽहं

यस्य समक्षेऽयान्मणिरूपं,
माणिक्यं ह्युपलाभाम्।

---

१. जय : पालय पालय रे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यश्च मघवपदधारी तनुते,
सुकृतैषी तच्छ्लाघाम् ॥३१॥ प्राप्तानन्दोऽहं

दूरस्थोऽपि यको मुनिसंघे,
सूरिपदे ह्यभिषिक्तः।
तद्डालिम-गुण-कुसुम-षडंह्रि-
रहमस्मीति विविक्तः ॥३२॥ प्राप्तानन्दोऽहं

कलानिधिः कलिमलापहारी,
छद्मच्छिच्छौगेयः।
कालुः परमकृपालुः सततं,
श्रेयोऽर्थं संध्येयः ॥३३॥ प्राप्तानन्दोऽहं

जीवन विभव! हृदयसदनेश्वर!
प्राणप्रिय! सर्वस्व!
श्रीकालुप्रभुवर! निज शिष्यं,
प्रोद्धर्तुं प्रयतस्व ॥३४॥

[1]सर्वे कृपापरा मयि सन्तु,
स्मृताऽस्मृता जिनवरगुरवः।
भवतां करुणाकांक्षी सुतरा-
महमस्मीति विनीतरवः ॥३५॥ जिनवर! गुरुवर!

अशुभानि प्रलयन्त्वखिलानि,
त्वत् स्मरणार्जित-सुकृत-भरैः।
वदनासूनोः शिवगमनाशा,
सफला द्रुतमशुभान्तकरैः ॥३६॥

[2]सर्वेऽर्हन्तः केवलज्ञानवन्तः
सर्वे सिद्धाः सिद्धि-सौध-प्रसिद्धाः।

---

१. लय : प्रभाती।
२. लय : शालिनी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्माचार्या ये ह्युपाध्यायवर्याः,
सर्वे सन्तो वन्दनीया महान्तः ॥३७॥

१२. कर्तव्य-षट्त्रिंशिका

स्वकर्तव्यमकर्तव्यं, विदन्ति नहि ये जनाः।
यदा कदाप्यनिष्टं स्यादिह तेषामतर्कितम् ॥१॥

कृत्याकृत्यमजानानाः, पशूयन्ते नरा अपि।
कृत्याकृत्यविवेको हि, नृपश्वोरन्तरं विदुः ॥२॥

विहाय सकलं कार्यं, कार्यः कर्तव्य निर्णयः।
सर्वतः प्राग् मनुष्येण, साधुभिस्तु विशेषतः ॥३॥

साधोः साधुत्वसंरक्षा, कर्तव्यं प्रथमं मतम्।
तत्र क्षम्या क्षतिर्न स्याद्, मनागपि मनस्विनः ॥४॥

पदे पदे क्षतिं कुर्यात्, साधुत्वव्यपदेशभाक्।
ततस्तस्य कृते किं स्याल्लज्जास्पदमतोऽधिकम् ॥५॥

दद्याच्छिक्षां यथान्यस्मै, तथैवाचरणं निजम्।
केवलेनोपदेशेन, निश्चितं वाग्विडम्बना ॥६॥

शास्त्रीयाः साम्प्रदायिक्यो, मर्यादा निर्मिता मताः।
तास्ताः प्राणाधिका मत्वा, वर्तितव्यं सदा बुधैः ॥७॥

कुर्यात् तुच्छत्वबुद्धिं यो, मर्यादायां महामदः।
तुच्छत्वं प्राप्नुयाल्लोके, सोऽतिशीघ्रं समन्ततः ॥८॥

गणोऽयमहमेवास्मि, अहमेव गणोऽस्त्ययम्।
ऐक्यं ममास्य चान्योन्यं, चिन्तनीयमिति ध्रुवम् ॥९॥

शिरोरत्नमिवार्याज्ञां, धारयन्तः स्वमस्तके।
निर्मान्तु निखिलं कार्यम्, आचार्याज्ञानुवर्तिनः ॥१०॥

कस्योपरि यदा यत्र, यादृग् दृष्टिर्गणेशितुः।
तस्योपरि तदा तत्र, तादृग् दृष्टिर्भवेत् सताम् ॥११॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरोर्दृष्टिमनुदृष्टिरिङ्गितं चेङ्गितं तथा।
विचारोऽनुविचारं स्याच्छिष्याणां दुर्गुणद्विषाम्।
चित्तवृत्तिमनुस्वीया, चित्तवृत्तिर्मतिस्तथा।
श्रीवीरप्रभुणा प्रोक्तम्—आचारांगे विलोक्यताम्॥
॥१२, १३॥ (युग्मम्)

अप्रसन्नो गुरुर्भूयात्, किञ्चित् कारणमाश्रयन्।
प्रसन्नीकुरुतां शिष्यो, नम्रवाक्यनिवेदनात्॥१४॥

विनेयो निजसर्वस्वं, मन्यते सर्वदा गुरुम्।
आराधयेत् यथा वह्निम्, आहिताग्निः कृतांजलिः॥१५॥

पृष्टो गुरुभिराहूतो, निर्दिष्टोऽभीष्टकर्मणि।
मन्वानो भागधेयं स्वं, धन्यं धन्यस्तथाचरेत्॥१६॥

वाढस्वरेण यत्रेष्टं, जल्पनं वाढमालपेत्।
मन्दस्थाने तथा मन्दं वर्तेताज्ञा यथा गुरोः॥१७॥

सूचनां सकृदाकर्ण्य, न द्विस्त्रिः श्रोतुमापतेत्।
संपादयेत्तथा कार्यं, यथा स्याद् विनयश्रुतिः॥१८॥

कार्ये मर्मणि वाक्ये वा, प्रच्छन्ने प्रकटेऽपि वा।
न मनागपि मालिन्यमाचार्येऽनुते सुधीः॥१९॥

उपालम्भे प्रशंसायां, चेतोवृत्तिः सदा समदृक्
निरतः साधनामार्गे, निर्वाणं साधयेद्ध्रुवम्॥२०॥

गुरोर्वाक्यं प्रतीक्षेत, मनस्यामोदमादधत्।
मुक्ताहार इवाकण्ठ, स्थापयेत् तत्समादरात्॥२१॥

पठने-पाठने चैव, लेखने प्रतिलेखने।
शिक्षणे वीक्षणे स्थाने, साध्वीः स्यात् सावधानता॥२२॥

सर्वव्रतशिरोरत्नं ब्रह्मचर्यमुदीरितम्।
वृत्तिभिर्नवभिस्तस्य, कार्या रक्षा महात्मभिः॥२३॥

भ्रूविक्षेपमनौचित्याद्, न सृजेदात्मयन्त्रितः।
लोके हास्यं गृहे हानिः—येन भूयादचिन्तिता॥२४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृष्टे वा यदि वाऽपृष्टे, दृष्टेऽदृष्टेऽपि कर्मणि।
प्राणात्ययेऽपि नो ब्रूयाद्, मृषा सत्यव्रतो मुनिः ॥२५॥

धर्मोपकरणेऽप्यीत्थं, न ममत्वं समाचरेत्।
न हिंस्यात् प्राणिनः प्राणान् नादत्तमाददीत यत् ॥२६॥

रत्नाधिका भवेयुर्ये, सर्वदा विनयोचिताः।
विनयं नातिवर्वेत, तेषामग्रे महामतिः ॥२७॥

एते सन्ति लघीयान्सस्तर्जनीयाः क्षणे क्षणे।
नेति निर्घृणता कार्या स्वात्मसाधनतत्परैः ॥२८॥

कीदृग् प्रकृतिरेतस्य, पश्यैष कुरुते कथम्।
एतयोरैक्यमाचित्रं, धिगेष नहि लज्जते ॥२९॥

इत्याद्यालोचनां त्यक्त्वा, परेषां स्वात्मदर्शिभिः।
स्वदोषा दर्शनीयाः स्युर्येन स्यान्निर्वृतिर्ह्रदि ॥३०॥

लभेरन्नापदं दीर्घां, परदोषं दिदृक्षवः।
स्वात्मदर्शी सुखी सद्यो, वीर-वाणी श्रुतिश्रुता ॥३१॥

शीघ्रं सद्धर्मसंघस्य, प्रचारःपृथ्वीतले।
कथं भूयादिति ध्यायेत्, सर्वदा स्वधिया सुधीः ॥३२॥

सोढव्याः शक्तिमत्त्वेन, द्वाविंशतिः परीषहाः।
कातराः कष्टवेलायां, भ्रश्यन्ति संयमाद् भृशम् ॥३३॥

हृद्दार्ढ्यं रक्षणीयं भो, भीतिमुत्सार्य भावतः।
नीतिन्याययुते मार्गे, सदा चेतःप्रसन्नता ॥३४॥

अध्यात्मचिन्ता सुचिरं विधेया,
कदापि हेया न विमोक्षवीथिः।
गेया गुरोः सद्गुणगीतिरेव,
ध्येया कृतिः सद्विषणाधनेन ॥३५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्वचित् कलाया न मदो विधेयो,
न दम्भचर्या न च दोषवृद्धिः।
कृतातिचारस्य विशुद्धिराशु,
कार्या विकार्या न विचारवृत्तिः ॥३६॥

साधूनां सुविवेकपूरितदृशां साध्वीसमाजस्य च।
किं ध्येयं सततं विचार-रुचिरं चादेयमप्यस्ति किम्॥
हेयं ज्ञेयमथेति संगमयितुं चैकाह्निकीयं कृता।
सद्बोधा वदनाङ्गजेन गणिना कर्तव्य-षट्त्रिंशिका[1] ॥३७॥

१३. श्री भक्तामर स्तोत्रम्
(आचार्य श्री मानतुंगकृत)

भक्तामर-प्रणत-मौलिमणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमोवितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥१॥

यःसंस्तुतः सकल-वाङ्मयतत्त्वबोधा-
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोक-नाथैः।
स्तोत्रैर् जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥२॥

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ!
स्तोतुं समुद्यत-मतिर् विगत-त्रपोऽहम्।
बाल विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यःक इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

वक्तु गुणान् गुणसमुद्र! शशांककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धया।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धतः नक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥

---

१. यह कृति आचार्यश्री तुलसी द्वारा आशुकविता के रूप में एक दिन में तैयार की गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश !
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारु-चाम्र-कलिका-निकरैकहेतु ॥६॥

त्वत्संस्तवेन भवसन्तति-सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्त-लोकमलिनीलमशेषमाशु-
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥७॥

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफल-द्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥८॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त-दोषं
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥९॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण ! भूतनाथ !
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ? ॥१०॥

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युति-दुग्धसिंधोः
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥११॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललामभूत !
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥१२॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि
निःशेष-निर्जित-जगत्-त्रितयोपमानम् ।
विम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य
यद् वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥

सम्पूर्णमण्डल-शशांककलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ।
ये संश्रिता स्त्रिजगदीश्वर-नाथमेकं
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

निर्धूमवर्तिरपवर्जित-तैलपूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदर-निरुद्धमहाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र ! लोके ॥१७॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांकबिम्बम् ॥१८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा?
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सु नाथ!
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्जलधरैर जलभारनम्रैः ॥१९॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनंगकेतुम्।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धि-बोधात्।
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात्।
धाताऽसि धीर! शिवमार्गविधेर् विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि-शोषणाय ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैस्
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश !
दोषैरुपात्त-विविधाश्रय-जातगर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत् किरणमस्ततमोवितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति ॥२८॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्-विलसदंशुलता-वितानं
तुंगोदयाद्रि-शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥

कुन्दावदात-चलचामर-चारुशोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशांक-शुचिनिर्झर-वारिधार-
मुच्चैःस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांककान्त-
मुच्चै स्थितं स्थगितभानुकर-प्रतापम् ।
मुक्ताफल-प्रकरजाल-विवृद्धशोभं
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

उन्निद्रहेम-नवपंकजपुञ्जकान्ती
पर्युल्लसन्-नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३२॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकाशिनोऽपि ॥३३॥

श्च्योतन् मदाविलविलोलकपोलमूल-
मत्तभ्रमद्-भ्रमरनाद-विवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३४॥

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ताफल-प्रकर-भूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३५॥

कल्पान्तकाल-पवनोद्धत-वह्निकल्पं
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥३६॥

रक्तेक्षणं समदकोकिल-कण्ठनीलं
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकस्
त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥

वल्गत्तुरंग-गजगर्जित-भीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूख-शिखापविद्धं
त्वत्कीर्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति ॥३८॥

कुन्ताग्रभिन्न-गजशोणित-वारिवाह-
वेगावतार-तरणातुरयोध-भीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षास्-
त्वत्पाद-पंकजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥३९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीन-पीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।
रंगत्तरंग-शिखरस्थित-यानपात्रास्
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥४०॥

उद्भूतभीषणजलोदर-भारभुग्नाः
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पाद-पंकजरजोऽमृतदिग्धदेहा
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४१॥

आपाद-कण्ठमुरुशृंखल-वेष्टितांगा,
गाढं बृहन्निगडकोटि-निघृष्टजंघाः
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ॥४२॥

मत्तद्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि-
संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥

१४. कल्याण-मन्दिर-स्तोत्रम्

(आचार्यश्री सिद्धसेन द्वारा विरचित)

कल्याण-मन्दिरमुदारमवद्य-भेदि,
भीताभय-प्रदमनिन्दित-मङ्घ्रिपद्मम् ।
संसार-सागर-निमज्जदशेष-जन्तु-
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर् न विभुर् विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय-धुमकेतोस्,
तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः ।
धृष्टोऽपि कौशिक-शिशुर् यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥३॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्त-वान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्
मीयेत केन जलधेर् ननु रत्नराशिः ॥४॥

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि
कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः ॥५॥

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ।
जाता तदेवमसमीक्षित-कारितेयं,
जल्पन्ति वा निज-गिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥६॥

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते,
नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रातपोपहत-पान्थजनान् निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्म-बन्धाः ।
सद्यो भुजंगममया इव मध्यभाग-
मभ्यागते वनशिखंडिनि चन्दनस्य ॥८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !
रौद्रैरुपद्रवशतैस् त्वयि वीक्षितेऽपि ।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥९॥

त्वं तारको जिन ! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ।
यद् वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥

यस्मिन् हर-प्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन ॥११॥

स्वामिन्ननल्प-गरिमाणमपि प्रपन्ना-
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥१२॥

क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्म-चौराः ।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥१३॥

त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज-कोशदेशे ।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥१४॥

ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।
तीव्रानलादुपल-भावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातु-भेदाः ॥१५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥१६॥

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥१७॥

त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ।
किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शंखो,
नो गृह्यते विविध-वर्णविपर्ययेण ॥१८॥

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥१९॥

चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ।
त्वद्-गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥२०॥

स्थाने गभीरहृदयोदधि-सम्भवा याः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यतः परमसम्मद-संग-भाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥२१॥

स्वामिन् ! सुदूरमवनम्र समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि-पुंगवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥२२॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्यामं गभीर-गिरमुज्ज्वल-हेमरत्न-
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैश्
चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥२३॥

उद्गच्छता तव सितद्युति-मण्डलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥

भो ! भो ! प्रमादमवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ।
एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥२५॥

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ।
मुक्ताकलाप-कलितोल्लसितातपत्र-
व्याजात् त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥२६॥

स्वेन प्रपूरित-जगत्त्रय-पिण्डितेन,
कान्ति-प्रताप-यशसामिव संचयेन ।
माणिक्य-हेम-रजत-प्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥

दिव्यस्रजो जिन ! नमत्-त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् ।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥

त्वं नाथ ! जन्म-जलधेर्विपराङ्मुखोऽपि,
यत् तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य-सतस्तवैव,
चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं,
किं वाऽक्षर-प्रकृति-रप्यलिपिस्त्वमीश !
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतु ॥३०॥

प्राग्भार-संभृत-नभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।
छायाऽपि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो-
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥

यद्गर्जदूर्जित-घनौघमद्रभ्र-भीमं,
भ्रश्यत्-तडिन्मुसल-मांसल-घोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तर वारिकृत्यम् ॥३२॥

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति-मर्त्यमुण्ड-
प्रालम्बभृद्-भयद-वक्त्रविनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याऽभवत् प्रतिभवं भवदुःख-हेतुः ॥३३॥

धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्यः
माराधयन्ति विधिवद् विधुतान्यकृत्या ।
भक्त्योल्लसत्-पुलक-पक्ष्मल-देहदेशाः,
पाद-द्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥३४॥

अस्मिन्नपार-भववारिनिधौ मुनीश !
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मन्त्रे,
किं वा विपद्-विषधरी सविधं समेति ॥३५॥

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव !
मन्ये मया महितमीहित-दान-दक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥३६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नूनं न मोह-तिमिरावृत-लोचनेन,
पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते ॥३७॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःख पात्रं,
यस्मात् क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥३८॥

त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !
कारुण्य-पुण्यवसते ! वशिनां वरेण्य !
भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय,
दुःखांकुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि ॥३९॥

निःसंख्य-सार-शरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादितरिपु-प्रथितावदातम् ।
त्वत्पाद-पंकजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
वध्योऽस्मि चेद् भुवन-पावन ! हा हतोस्मि ॥४०॥

देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिल-वस्तु-सार !
संसार-तारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ !
त्रायस्व देव ! करुणाह्रद ! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बुराशेः ॥४१॥

यद्यस्ति नाथ ! भवदंघ्रि-सरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्तत संचितायाः ।
तन्मे त्वदेक-शरणस्य शरण्य ! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !
सान्द्रोल्लसत् पुलक-कंचुकितांगभागाः ।
त्वद् बिम्ब निर्मल-मुखाम्बुज-बद्धलक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥४३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन-नयन-कुमुदचन्द्र !
प्रभास्वराः स्वर्ग-सम्पदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया,
अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥

१५. आलम्बन-सूत्र

'आलम्बन सूत्र' दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि कई आगमों के विशिष्ट सूत्रों का संकलन है। वैसे तो आगम का हर बोल अपने आप में सूक्त ही होता है पर ये सूक्त नितान्त आध्यात्मिक हैं। इनको पढ़ते-पढ़ते ही भीतर में अध्यात्म की ऊर्जा जागती है। बहिर्मुखी चित्तवृत्तियों को अन्तर्मुखी बनाने के लिए यह एक सशक्त आलम्बन है।

१ जो पुव्वरत्तावररत्तकाले,
संपिक्खई अप्पगमप्पएणं ।
किं मे कडं किं च मे किच्चसेसं ?
किं सक्कणिज्जं न समायरामि ॥

२ किं मे परो पासइ ? किं व अप्पा ?
किं वाहं खलियं न विवज्जयामि ।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो,
अणागयं नो पडिबंध कुज्जा ॥

३ जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं,
काएण वाया अदु माणसेणं ।
तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा,
आइन्नओ खिप्पमिवक्खलीणं ॥

४ अणिएयवासो समुयाणचरिया,
अन्नायउंछं पइरिक्कया य ।
अप्पोवही कलह-विवज्जणा य,
विहारचरिया इसिणं पसत्था ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५. चरे पयाइं परिसंकमाणो,
जं किंचि पासं इह मण्णमाणो।
लाभंतरे जीविय बूहइत्ता,
पच्छा परिन्नाय मलावधंसी।।

६. छंदं निरोहेण उवेइ मोक्खं,
आसे जहा सिक्खियवम्मधारी।।
पुव्वाइं वासाइं चरप्पमत्तो,
तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं।।

७. खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं,
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच्च लोयं समया महेसी,
अप्पाणरक्खी चरमप्पमत्तो।।

८. बहिया उड्ढमादाय,
नावकंखे कयाइ वि।
पुव्वकम्मखयट्ठाए,
इमं देहं समुद्धरे।।

९. सरीरमाहु नाव त्ति,
जीवो वुच्चइ नाविओ।
संसारो अण्णवो वुत्तो,
जं तरंति महेसिणो।।

१०. उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा,
पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा,
न यावि पूयं गरहं च संजए।।

११. जम्म दुक्खं जरा दुक्खं,
रोगा य मरणाणि य।
अहो दुक्खो हु संसारो
जत्थ कीसंति जंतवो।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१२. न तस्स दुक्खं विभयंति णाइओ,
न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा।
एक्को सयं पच्चणुहोई दुक्खं,
कत्तारमेवं अणुजाइ कम्मं ॥

१३. न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई,
असासया भोगपिवास जंतुणो।
न चे सरीरेण इमेणवेस्सई,
अविस्सई जीवियपज्जवेण मे ॥

१४. रागो य दोसो वि य कम्मबीयं,
कम्मं च मोहप्पभवं वयंति।
कम्मं च जाईमरणस्स मूलं,
दुक्खं च जाईमरणं वयंति ॥

१५. दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो,
मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो,
लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥

१६. अधुवे असासयम्मि,
संसारम्मि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं,
जेणाहं दोग्गइं न गच्छेज्जा ॥

१७. पूयणट्ठी जसोकामी,
माणसम्माणकामए।
बहुं पसवई पावं,
मायासल्लं च कुव्वई ॥

१८. जा जा वच्चई रयणी,
न सा पडिनियत्तई।
धम्मं च कुणमाणस्स,
सफला जंति राइओ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९. सुहसायगस्स समणस्स,
सायाउलगस्स निगामसाइस्स।
उच्छोलणापहोइस्स,
दुलहा सुग्गइ तारिसगस्स॥

२०. तवोगुणपहाणस्स,
उज्जुमइ खंतिसंजमरयस्स।
परीसहे जिणंतस्स,
सुलहा सुग्गइ तारिसगस्स॥

२१. सव्वभूयप्पभूयस्स
सम्मं भूयाइ पासओ।
पिहियासवस्स दंतस्स,
पावं कम्मं न बंधई॥

२२. जरामरणवेगेणं,
वुज्झमाणाण पाणिणं।
धम्मो दीवो पइट्ठा य,
गई सरणमुत्तमं॥

२३. सोही उज्जुयभूयस्स,
धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।
निव्वाणं परमं जाइ,
घयसित्त व्व पावए॥

२४. उवलंवो होइ भोगेसु,
अभोगी नोवलिप्पई।
भोगी भमइ संसारे,
अभोगी विप्पमुच्चई॥

२५. जहा किंपाग फलाणं,
परिणामो न सुंदरो।
एवं भुत्ताण भोगाणं,
परिणामो न सुंदरो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२६. सल्लं कामा विसं कामा,
कामा आसीविसोवमा।
कामे पत्थेमाणा,
अकामा जंति दोग्गइं॥

२७. रसा पगामं न निसेवियव्वा,
पाय रसा दित्तिकरा नराणं।
दित्तं च कामा समभिद्दवंति,
दुमं जहा साउफलं व पक्खी॥

२८. जे य कंते पिए भोए,
लद्धे विपिट्ठिकुव्वई।
साहीणे चयइ भोए
से हु चाइ त्ति वुच्चइ॥

२९. सुवण्णरुप्पस्स उ पव्वया भवे,
सिया हु केलाससमा असंखया।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि,
इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया॥

३०. सक्का सहेउं आसाए कंटया,
अओमया उच्छहया नरेणं।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए,
वईमए कण्णसरे स पुज्जो॥

३१. समावयंता वयणाभिघाया
कण्णंगया दुम्मणियं जणंति।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे,
जिइंदिए जो सहई स पुज्जो॥

३२. हओ न संजले भिक्खू,
मणं पि न पओसए।
तितिक्खं परमं नच्चा,
भिक्खुधम्मं विचिंतए॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३३. जो सहस्सं सहस्साणं,
संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं,
एस से परमो जओ॥

३४. न तं अरी कंठछेत्ता करेइ,
जं से करे अप्पणिया दुरप्पा।
से नाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते,
पच्छाणुतावेण दयाविहूणो॥

३५. अप्पा कत्ता विकत्ता य,
दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च,
दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ॥

३६. एगप्पा अजिए सत्तू,
कसाया इंदियाणि य।
ते जिणित्तु जहानायं,
विहरामि अहं मुणी॥

३७. अप्पाणमेव जुज्झाहि,
किं ते जुज्झेण बज्झओ।
अप्पाणमेव अप्पाणं,
जइत्ता सुहमेहए॥

३८. अप्पा चेव दमेयव्वो,
अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होइ,
अस्सिं लोए परत्थ य॥

३९. वरं मे अप्पा दंतो,
संजमेण तवेण य।
माहं परेहिं दम्मंतो,
बंधणेहि वहेहि य॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४०. एगो मे सासओ अप्पा,
नाण-दंसण-संजुओ।
सेसा मे बाहिरा भावा,
सव्वे संजोगलक्खणा॥

४१. अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो,
सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ,
सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चई॥

४२. खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो,
तवे रया संजम अज्जवे गुणे।
धुणंति पावाइं पुरेकडाइं,
नवाइ पावाइं न ते करेंति॥

४३. जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ,
चएज्ज देहं न हु धम्मसासणं।
तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया,
उवेंतवाया व सुदंसणं गिरिं॥

४४. नाणस्स होइ भागी,
थिरयरओ दंसणे चरित्ते य।
धन्ना आवकहाए,
गुरुकुलवासं न मुंचंति॥

४५. जावन्तऽविज्जापुरिसा,
सव्वे ते दुक्खसंभवा।
लुप्पंति बहुसो मूढा,
संसारंमि अणंतए॥

४६. समिक्ख पंडिए तम्हा,
पास-जाईपहे बहू।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा,
मेत्तिं भूएसु कप्पए॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४७. सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो,
अपावभावस्स तवे रयस्स।
विसुज्झई जं सि मलं पुरेकडं,
समीरियं रुप्पमलं व जोइणा॥

४८. नाणस्स सव्वस्स पगासणाए,
अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य संखएणं,
एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं॥

४९. नाणेणं दंसणेणं च,
चरित्तेण तहेव य।
खंतीए मुत्तीए,
वड्ढमाणो भवाहि य॥

५०. सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी,
न वीससे पंडिए आसुपन्ने।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं,
भारुण्डपक्खी व चरप्पमत्तो॥

५१. जागरह णरा णिच्चं,
जागरमाणस्स वड्ढते बुद्धी।
जो सुवइ ण सो धन्नो,
जो जग्गई सो सया धन्नो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आलोचना पाठ

दोहा

वन्दों पांचों परम-गुरु चौबीसों जिनराज।
करूं शुद्ध आलोचना, शुद्धि करण के काज ॥१॥

सखीछन्द

सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किए अति भारी।
तिनकी अब निर्वृत्ति काजा, तुम शरण लही जिनराजा॥
इक वे ते चउ इंद्री वा, मन-रहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहिं करुणा धारी, निरदइ ह्वै घात विचारी॥

समरम्भ, समारम्भ आरम्भ, मन वच तन कीने प्रारम्भ।
कृत कारित मोदन करिकै, क्रोधादि चतुष्टय धरिकै॥
शत आठ जु इनि भेदनतैं, अघ कीनै हरिछेदनतैं।
तिनकी कहुं कोलों कहानी, तुम जानत केवलज्ञानी॥

विपरीत एकांत विनयकें, संशय अज्ञान कुनयके।
वश होय घोर अघ कीने, बचतैं नहिं जात कहीने॥
कुगुरुनकी सेवा कीनी, केवल अदयाकरि भीनी।
या विधि मिथ्यात्व भ्रमायो, चहुंगति मधि दोष उपायो॥

हिंसा पुनि झूंठ जु चोरी, पर-वनितासों दृग जोरी।
आरम्भ परिग्रह भीनों, पन पाप जु या विधि कीनो॥
सपरस रसना घ्राननको, चखु कान विषय-सेवन को।
बहु करम किये मनमाने, कछु न्याय अन्याय न जाने॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फल पच उदम्बर खाये; मधु मांस मद्य चित्त चाहे।
नहि अष्ट मूलगुण धारी, विषयन सेये दुःखकारी॥
दुइवीस अभख जिन गाये, सो भी निस दिन भुंजाये।
कछु भेदाभेद न पायो, ज्यों त्यों करि उदर भरायो॥

अनंतानु जु बन्धी जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।
संज्वलन चौकरी गुनिये, सब भेद जु षोडश मुनिये॥
परिहास अरति रति शोग, भय ग्लानि त्रिवेद संयोग।
पनवीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किए हम॥

निद्रावश शयन कराई, सुपने मधि दोष लगाई।
फिर जाग विषय-वन धायो, नानाविध विष फल खायो॥
किए आहार निहार विहारा, इनमें नहिं जतन विचारा।
विन देखी धरी उठाई, विन शोधी वस्तु जु खाई॥

तव ही परमाद सतायो, वहुविधि विकल्प उपजायो।
कछु सुधि बुधि नाहिं रही है, मिथ्या मति छाय गयी है॥
मर्यादा तुम ढिग लीनी, ताह में दोष जु कीनी।
भिन्न भिन्न अब कैसे कहिये, तुम ज्ञान-विषै सब पइये॥

हा हा ! मैं दुष्ट अपराधी, त्रस-जीवन राशि विराधी।
थावर-की जतन न कीनी, उरमें करुना नहिं लीनी॥
पृथिवी वहु खोद कराई, महलादिक जागा चिनाई।
पुनि बिन गाल्यो जल ढोल्यो, पंखातैं पवन विलोल्यो॥

हा हा ! मैं अदयाचारी, वहु हरितकाय जु विदारी।
तामधि जीवन के खन्दा, हम खाये धरि आनन्दा॥
हा हा ! परमाद वसाई, बिन देखे अग्नि जलाई।
तामधि जु जीव जे आये, तेहू परलोक सिधाये॥

बीध्यो अन्न राति पिसायो, ईंधन बिन सोधि जलायो।
झाड़ू ले जागाँ बुहारी, चिंवटी आदिक जीव बिदारी॥
जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डार जु दीनी।
नहिं जल-थानक पहुंचाई, किरिया बिन पाप उपाई॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि कुल बहु घात करायो।
नदियन बिच चीर धुवाये, कोसन के जीव मराये॥
अन्नादिक शोध कराई, तामैं जु जीव निसराई।
तिनका नहिं जतन कराया, गलियारे धूप डराया॥

पुनि द्रव्य कमावन काजे, बहु आरम्भ हिंसा साजे।
किये तिसनावश अघ भारी, करुना नहिं रंच विचारी॥
इत्यादिक पाप अनन्ता, हम कीने श्री भगवन्ता।
सन्तति चिरकाल उपाई, वानी तैं कहिय न जाई॥

ताको जु उदय अब आयो, नानाविधि मोहि सतायो।
फल भुंजत जिय दुःख पावैं, वचतैं कैसे करि गावैं॥
तुम जानत केवलज्ञानी, दुःख दूर करो शिवथानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारन विरद सही है॥

जो गांवपति इक होवे, सो भी दुखिया दुःख खोवे।
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुःख मेटहु अन्तरजामी॥
द्रोपदि को चीर वढ़ायो, सीता प्रति कमल रचायो।
अंजन से किये अकामी, दुःख मेटो अन्तरजामी॥

मेरे अवगुन न चितारो, प्रभु अपनो विरद निहारो।
सब दोषरहित करि स्वामी, दुःख मेटहु अन्तरजामी॥
इंद्रादिक पद नहिं चाहूं, विषयनि में नाहिं लुभाऊं।
रागादिक दोष हरीजै, हरमातम निज-पद दीजे॥

दोहा

दोषरहित जिनदेवजी, निजपद दीज्यो मोय।
सब जीवन के सुख वढ़ें, आनन्द मंगल होय॥
अनुभव माणिक पारखी, 'जौहरी' आप जिनंद।
ये ही वर मोहि दीजिये, चरण शरण आनन्द॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्षमार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया॥
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति-भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो॥१॥

विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं।
निज-परके हित-साधन में जो, निश-दिन तत्पर रहते हैं॥
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते है।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख-समूह को हरते हैं॥२॥

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उनही जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे॥
नहीं सताऊं किसी जीव को, झूंठ कभी नहीं कहा करूं।
परधन-वनिता पर न लुभाऊं, संतोषामृत पिया करूं॥३॥

अहंकार का भाव न रक्खूं, नहीं किसी पर क्रोध करूं।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूं॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूं।
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूं॥४॥

मैत्रीभाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन-दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा-स्रोत बहे॥
दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्यभाव रक्खूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे॥५॥

गुणी जनों को देख हृदय मे, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे॥
होऊं नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे॥६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊं या, मृत्यु आज ही आ जावे॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे॥७॥

होकर सुख में मग्न न फूलें, दुःख में कभी न घबरावें।
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहिं भय खावें॥
रहे अडोल-अकंप निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावें।
इष्टवियोग-अनिष्टयोग में, सहन-शीलता दिखलावें॥८॥

सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
वैर-पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे॥
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना, मनुज-जन्म फल सब पावे॥९॥

ईति भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे॥
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शांति से जिया करे।
परम अहिंसा-धर्म जगत में, फैल सर्व-हित किया करे॥१०॥

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करे॥
बनकर सब 'युगवीर' हृदय से, देशोन्नति रत रहा करें।
वस्तु-स्वरूप विचार खुशी से सब दुःख संकट सहा करें॥११॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बारह-भावना

(कविवर भूधरदासजी कृत)

दोहा

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार ॥१॥

दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार।
मरती बिरियां जीव को, कोई न राखन हार ॥२॥

दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णावश धनवान।
कहूं न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ॥३॥

आप अकेला अवतरै, मरे अकेला होय।
यूं कबहूं इस जीव को, साथी सगा न कोय ॥४॥

जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय।
घर सम्पत्ति पर प्रगटये, पर है परिजन लोय ॥५॥

दिपै चाम चादरमढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन-गेह ॥६॥

सोरठा

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमै सदा।
कर्म-चोर चहुं ओर, सरवस लूटैं सुध नहीं ॥७॥

सतगुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमै।
तब कछु बनैं उपाय, कर्म-चोर आवत रुकैं ॥८॥

दोहा

ज्ञान-दीप तप तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर।
या विध बिन निकसै नहीं, बैठे पूरब चोर ॥९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार।
प्रबल पंच इन्द्री-विजय, धार निर्जरा सार ॥१०॥

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादितैं, भरमत हैं बिन ज्ञान ॥११॥

जांचै सुर-तरु देय सुख, चिंतन चिंतारैन।
बिन जांचे बिन चिंतये, धर्म सकल सुख देन ॥१२॥

धन कन कंचन राजसुख, सबहि सुलभकर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान ॥१३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भक्तामर स्तोत्र (भाषा)

(श्री हेमराज कृत)

आदिपुरुष आदीश जिन आदि सुविधि करतार।
धरम-धुरंधर परमगुरु, नमों आदि अवतार॥

सुर-नत-मुकुट रतन-छबि करैं, अन्तर पाप-तिमिर सब हरैं।
जिनपद वंदों मन वच काय, भव-जल-पतित उधरन-सहाय॥
श्रुत-पारग इंद्रादिक देव, जाकी थुति कीनी कर सेव।
शब्द मनोहर अरथ विशाल, तिस प्रभु की वरनों गुन-माल॥
विबुध-वंद्य पद मैं मतिहीन, हो निर्लज्ज थुति-मनसा कीन।
जल प्रतिविम्ब बुद्धि को गहै, शशि-मंडल बालक ही चहै॥
गुन-समुद्र तुम गुन अविकार, कहत न सुर-गुरु पावैं पार।
प्रलय-पवन-उद्धत जल-जन्तु, जलधि तिरै को भुज बलवंतु॥
सो मैं शक्ति-हीन थुति करूं, भक्ति भाव-वश कछु नहिं डरूं।
ज्यों मृगि निज-सुत पालन हेत, मृगपति सन्मुख जाय अचेत॥
मैं शठ सुधी हंसन को धाम, मुझ तव भक्ति बुलावै राम।
ज्यों पिक अंब-कली-परभाव, मधु-ऋतु मधुर करै आराव॥
तुम जस जंपत जन छिनमाहिं, जनम-जनम के पाप नशाहिं।
ज्यों रवि उगै फटै ततकाल, अलिवत् नील निशा-तम जाल॥
तव प्रभावतैं कहूँ विचार, होसी यह थुति जन-मन-हार।
ज्यों जल-कमल पत्र पै परै, मुक्ताफल की दुति विस्तरै॥
तुम गुन-महिमा हत-दुख-दोष, सो तो दूर रहो सुख-पोष।
पाप-विनाशक है तुम नाम, कमल-विकाशी ज्यों रवि धाम॥
नहिं अचम्भ जो होहिं तुरन्त, तुमसे तुम गुण वरणत संत।
जो अधीन को आप समान, करै न सो निंदित धनवान॥
इकटक जन तुमको अविलोय, अवरविषैंरति करै न सोय।
को करि छीर जलधि जल पान, क्षार नीर पीवै मतिमान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रभु तुम वीतराग गुन-लीन, जिन परमानु देह तुम कौन।
हैं तितने ही ते परमानु, यातैं तुम सम रूप न आनु॥
कहँ तुम मुख अनुपम अविकार, सुर नर-नाग-नयन-मनहार।
कहाँ चन्द्र-मण्डल सकलंक, दिन में ढाक-पत्र समरंक॥
पूरन-चन्द-ज्योति छविवंत, तुम गुन तीन जगत लंघंत।
एक नाथ त्रिभुवन आधार, तिन विचरत को करै निवार॥
जो सुर-तिय विभ्रम आरम्भ, मन न डिग्यो तुम तौ न अचंभ।
अचल चलावै प्रलय समीर, मेरु शिखर डगमगैं न धीर॥
धूमरहित वाती गत नेह, परकाशै त्रिभुवन-घर एह।
वात-गम्य नाहीं परचंड, अपर दीप तुम बलो अखण्ड॥
छिपहु न लुपहु राहु की छांहिं, जग परकाशक हो छिनमांहिं।
घन अनवर्त्त दाह विनिवार, रवितैं अधिक धरो गुणसार॥
सदा उदित विदलित मनमोह, विघटित मेघ राहु अविरोह।
तुम मुख कमल अपूरव चन्द, जगत विकाशी जोति अमंद॥
निश दिन शशि रवि को नहिं काम, तुम मुखचंद हरै तम धाम।
जो स्वभावतैं उपजै नाज, सजल मेघ ते कौनहु काज॥
जो सुबोध सोहै तुम माहिं, हरि हर आदिक में सो नाहिं।
जो दुति महा रतन में होय, कांच खण्ड पावै नहिं सोय॥

नाराच छन्द

सराग देव देख मैं भला विशेष मानिया।
स्वरूप जाहि देख वीतराग तू पिछानिया॥
कछु न तोहि देखके जहाँ तुही विशेखिया।
मनोग चित्त चोर और भूल हूं न पेखिया॥
अनेक पुत्रवंतिनी नितम्बिनी सपूत हैं।
न तो समान पुत्र और मातैं प्रसूत हैं॥
दिशा धरंत तारिका अनेक कोटिको गिनै।
दिनेश तेजवन्त एक पूर्व ही दिशा जनै॥
पुरान हो पुमान हो पुनीत पुण्यवान हो।
कहैं मुनीश अन्धकार-नाशको सुभान हो॥
महंत तोहि जान के न होय वश्य काल के।
न और मोहि मोखपंथ देय तोहि टाल के॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनंत नित्य चित्त की अगम्य रम्य आदि हो।
असंख्य सर्व व्यापि विष्णु ब्रह्म हो अनादि हो॥
महेश कामकेतु योग ईश योग ज्ञान हो।
अनेक एक ज्ञान रूप शुद्ध संतमान हो॥
तुही जिनेश बुद्ध है सुबुद्धि के प्रमानतैं।
तुही जिनेश शंकरो जगत्त्रये विधानतैं॥
तु ही विधात है सही सुमोखपंथ धारतैं।
नरोत्तमो तुही प्रसिद्ध अर्थ के विचारतैं॥
नमों करूँ जिनेश तोहि आपदा निवार हो।
नमों करूँ सु भूरि भूमि-लोक के सिंगार हो॥
नमों करूँ भवाब्धि-नीर-राशि-शोष-हेतु हो।
नमों करूँ महेश तोहि मोखपंथ देतु हो॥

चौपाई

तुम जिन पूरन गुन-गान भरे, दोष गर्वकरि तुम परिहरे।
और देव-गण आश्रय पाय, स्वप्न न देखे तुम फिर आय॥
तरु अशोक-तर किरन उदार, तुम तन शोभित है अविकार।
मेघ निकट ज्यों तेज फुरंत, दिनकर दिपै तिमिर निहनंत॥
सिंहासन मनि-किरन-विचित्र, तापर कंचन-वरन पवित्र।
तुम तन शोभित किरन-विथार, ज्यों उदयाचल रवि तम हार॥
कुन्द—पुहुप-सित-चमर ढुरन्त, कनक-वरन तुम तन शोभंत।
ज्यों सुमेरु-तट निर्मल कांति, झरना झरै नीर उमगांति॥
ऊंचे रहैं सूर दुति लोप, तीन छत्र तुम दिपैं अगोप।
तीन लोक की प्रभुता कहैं, मोती झालरसों छबि लहैं॥
दुन्दुभि-शब्द गहर गंभीर, चहुंदिशि होय तुम्हारे धीर।
त्रिभुवन जन शिव संगम करै, मानूं जय जय रव उच्चरै॥
मंद पवन गन्धोदक इष्ट, विविध कल्पतरु पुहुप सुवृष्ट।
देव करैं विकसित दल सार, मानों द्विज पंकति अवतार॥
तुम तन भामण्डल जिनचन्द, सब दुतिवंत करत है मंद।
कोटि शंख रवि तेज छिपाय, शशि निर्मल निशि करै अछाय॥
स्वर्ग मोख मारग संकेत, परम धरम उपदेशन हेत।
दिव्य वचन तुम खिरें अगाध, सब भाषागर्भित हित साध॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोहा

विकसित सुवरन कमल दुति, नख दुति मिलि चमकाहिं।
तुम पद पदवी जहं धरो, तहं सुर कमल रचाहिं॥
ऐसी महिमा तुम विषै, और धरैं नहिं कोय।
सूरज में जो जोत है, नाहिं तारा गण होय॥

षट्पद

मद अवलिप्त कपोल मूल अलि कुल झंकारैं।
तिन सुन शब्द प्रचण्ड क्रोध उद्धत अति धारैं॥
काल वरन विकराल, कालवत् सनमुख आवै।
ऐरावत सो प्रबल सकल जन भय उपजावै॥
देखि गयंद न भय करै तुम पद महिमा छीन।
विपति रहित सम्पति सहित वरतैं भक्त अदीन॥
अति मद मत्त गयन्द कुम्भथल नखन विदारै।
मोती रक्त समेत डारि भूतल सिंगारै॥
बांकी दाढ विशाल वदन में रसना लोलै।
भीम भयानक रूप देखि जन थरहर डोलै॥
ऐसे मृगपति पगतलैं जो नर आयो होय।
शरण गए तुम चरण की बाध करै न सोय॥
प्रलय पवनकर उठी आग जो तास पटंतर।
वमैं फुलिंग शिखा उतंग पर जलैं निरन्तर॥
जगत समस्त निगल्ल भस्मकर हैगी मानों।
तडतडाट दव अनल जोर चहुँदिशा उठानो॥
सो इक छिनमें उपशमें नाम नीर तुम लेत।
होय सरोवर परिनमैं विकसित कमल समेत॥
कोकिल कंठ समान स्याम तन क्रोध जलंता।
रक्त नयन फुंकार मार विष-कण उगलंता॥
फणको ऊँचा करै वेग ही सन्मुख धाया।
तव जन होय निशंक देख फणिपति को आया॥
जो चांपै निज पगतलैं व्यापै विष न लगार।
नाग-दमनि तुम नाम की है जिनके आधार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस रन माहिं भयानक रव कर रहे तुरंगम।
घन से गज गरजाहिं मत्त मानों गिरि जंगम॥
अति कोलाहल माहिं बात जहँ नाहिं सुनीजै।
राजन को परचण्ड देख बल धीरज छीजै॥

नाथ तिहारे नामतैं सो छिन मांहि पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशतैं अन्धकार विनशाय॥
मारै जहाँ गयन्द कुम्भ हथियार विदारै।
उमगै रुधिर प्रवाह वेग जल सम बिस्तारै॥

होय तिरन असमर्थ महाजोधा बल पूरे।
तिस रन में जिन तोर भक्त जे हैं नर सूरे॥
दुर्जय अरि कुल जीत के जय पावैं निकलंक।
तुम पद-पंकज मन बसै ते नर सदा निशंक॥

नक्र चक्र मगरादि मच्छ करि भय उपजावै।
जामें बड़वा अग्नि दाहतैं नीर जलावै॥
पार न पावै जास थाह नहिं लहिये जाकी।
गरजे अति गम्भीर लहरि की गिनती न ताकी॥
सुखसों तिरै समुद्र को जे तुम गुन सुमराहिं।
लोल-कलोलन के शिखर पार यान ले जाहिं॥

महा जलोदर रोग भार पीड़ित नर जे हैं।
वात पित्त कफ कुष्ट आदि जो रोग गहे हैं॥
सोचते रहैं उदास नाहिं जीवन की आशा।
अति घिनावनी देह धरैं दुर्गन्ध-निवासा॥
तुम पद-पंकज धूल को जो लावै निज अंग।
ते नीरोग शरीर लहि छिन में होय अनंग॥

पाँव कंठतैं जकर बाँध सांकल अति भारी।
गाढ़ी बेड़ी पैर माहिं जिन जांघ बिदारी॥
भूख प्यास चिन्ता शरीर दुःख जे बिललाने।
शरन नाहिं जिन कोय भूप के बंदीखाने॥
तुम सुमरत स्वयमेव ही बंधन सब खुल जाहिं।
छन में ते सम्पत्ति लहैं चिन्ता भय विनशाहिं॥

महामत्त गजराज और मृगराज दवानल।
फणपति रण परचंड नीर-निधि रोग महाबल॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बन्धन ये भय आठ डरप कर मानों नाशै।
तुम सुमरत छिन माहिं अभय थानक परकाशै॥
इस अपार संसार में शरन नाहिं प्रभु कोय।
यातैं तुम पद भक्त को भक्ति सहाई होय॥
यह गुनमाल विशाल नाथ तुम गुनन सवारी।
विविध वर्णमय-पुहुप गूंथ मैं भक्ति विथारी॥
जे नर पहिरे कंठ भावना मन में भावैं।
'मानतुंग' ते निजाधीन शिव-लक्ष्मी पावैं॥
भाषा भक्तामर कियो 'हेमराज' हित हेत।
जे नर पढैं सुभाव सों, ते पावैं शिव खेत॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री सिद्ध स्तुति

(हरिगीत)

तुम तरण तारण दुःख निवारण, भविक जीव आराधनं।
श्री नाभिनन्दन जगत-चन्दन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥१॥

जगत-भूषण विगत दूषण, प्रणव प्राण निरूपकं।
ध्यान-रूप अनूप उपमं, नमो सिद्ध निरंजनं ॥२॥

गगन मण्डल मुक्ति पदवी, सर्व ऊर्ध्व निवासनं।
ज्ञान-ज्योति अनन्त राजे, नमो सिद्ध निरंजनं ॥३॥

अज्ञान निद्रा विगत वेदन, दलित मोह निरायुषं।
नाम गोत्र निरंतरायं, नमो सिद्ध निरंजनं ॥४॥

विकट क्रोधा, मान योधा, माया लोभ विसर्जनं।
राग द्वेष विमर्द अंकुर, नमो सिद्ध निरंजनं ॥५॥

विमल केवल ज्ञान लोचन, ध्यान—शुक्ल—समीरितं।
योगिना अतिगम्य रूपं, नमो सिद्ध निरंजनं ॥६॥

योग ने समोसरण मुद्रा, परिपल्यंक—आसनं।
सर्व दीसे तेज—रूपं, नमो सिद्ध निरंजनं ॥७॥

जगत जिनके दास दासी, तास आस निरासनं!
चन्द्र पैं परमानन्द—रूपं, नमो सिद्ध निरंजनं ॥८॥

स्वसमय समकित दृष्टि जिनकी, सोय योगी अयोगिकं।
देख तामां लीन होवे, नमो सिद्ध निरंजनं ॥९॥

चन्द्र सूर्य दीप मणि की, ज्योति येन उलंघितं।
ते ज्योति थी अपरम ज्योति, नमो सिद्ध निरंजनं ॥१०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीर्थं सिद्धा अतीर्थं सिद्धा, भेद पंच दशाधिकं।
सर्व—कर्म—विमुक्त—चेतन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥११॥

एक मांहि अनेक राजे, अनेक मांहीं एकिकं।
एक अनेक की नाहिं संख्या, नमो सिद्ध निरंजनं ॥१२॥

अजर अमर अलख अनन्त, निराकार निरंजनं।
पर ब्रह्म ज्ञान अनन्त दर्शन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥१३॥

अतुल सुख की लहर में, प्रभु लीन रहे निरंतरं।
धर्म ध्यान थी सिद्ध दर्शन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥१४॥

ध्यान धूपं मनः पुष्पं, पंचेन्द्रिय हुताशनं।
क्षमा जाप सन्तोष पूजा, पूजो देव निरंजनं ॥१५॥

तुम मुक्ति दाता कर्म पाता, दीन जानि दया करो।
सिद्धार्थ नन्दन जगत वन्दन, महावीर जिनेश्वरं ॥१६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तुति

दोहा

कल्पवेल चिन्तामणी, काम-धेनु गुण-खान।
अलख अगोचर अगमगति, चिदानन्द भगवान् ॥१॥

परम ज्योति परमात्मा, निराकार अविकार।
निर्भयरूप ज्योति स्वरूप, पूरण ब्रह्म अपार ॥२॥

अविनाशी साहिब धणी, चिन्तामणी श्री पास।
अरज करूँ कर जोड़ के, पूरो वंछित आस ॥३॥

मन चिन्तित आशा फले, सकल सिद्ध हों काम।
चिन्तामणि को जाप जप, चिन्ता हरे यह नाम ॥४॥

तुम सम मेरे को नाहीं, चिन्तामणि भगवान्।
चेतन की यह विनती, दीजै अनुभव ज्ञान ॥५॥

(चौपाई)

प्राणत देवलोक से आये, जन्म वनारसी नगरी पाये।
अश्वसेन कुल मंडन स्वामी, तिहुं जग के प्रभु अन्तरजामी ॥६॥

वामादेवी माता के जाये, लक्षण नागफणी मणि पाये।
शुभ काया नव हाथ बखाणो, नील वरण तन निर्मल जाणो ॥७॥

मानव यक्ष सेवे प्रभु-पाय, पद्मावती देवी सुख दाय।
इन्द्र चन्द्र पारस गुण गावें, कल्प वृक्ष चिन्तामणि पावें ॥८॥

नित सुमरो चिन्तामणि स्वामी, आशा पूरे अन्तरयामी।
धन धन पारस पुरिसादाणी, तुम सम जग में को नहिं प्राणी ॥९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुमरो नाम सदा सुखकारी, सुख उपजै दुःख जाय बिसारी,
चेतन को मन तुमरे पास, मन वंछित पूरो प्रभु आस ॥१०॥

दोहा

ॐ भगवंत चितामणि, पार्श्व प्रभु जिन राय।
नमो नमो तुम नाम से, रोग शोक मिट जाय ॥११॥

वात पित्त दूरे टले, कफ नहिं आवे पास।
चिन्तामणि के नाम से, मिटै श्वास और खांस ॥१२॥

प्रथम दूसरो तीसरो, ताव चौथियो जाय।
शूल बहत्तर दूर हों, दादर खाज न थाय ॥१३॥

विस्फोटक गडगुम्बडा, कोढ अठारह दूर।
नेत्र रोग सब परिहरें, कण्ठ-माल चकचूर ॥१४॥

चिन्तामणि के जाप से, रोग शोक मिट जाय।
चेतन पारस नाम को, सुमरो मन चितलाय ॥१५॥

(चौपाई)

मन शुद्धे सुमरो भगवान्, भय भंजन चिन्तामणि ध्यान।
भूत प्रेत भय जावे दूर, जाप जपे सुख-सम्पत्ति पूर ॥१६॥

डाकण साकण व्यंतर देव, भय नहिं लागे पारस सेव।
जलचर थलचर उरपर जीव, इनको भय नहिं सुमरो पीव ॥१७॥

वाघ सिंह को भय नहिं होय, सर्प गोह आवे नहिं कोय।
बाट घाट में रक्षा करे, चिन्तामणि चिन्ता सब हरे ॥१८॥

टोणा टामण जादू करे, तुमरो नाम लिया सब टरे।
ठग फांसीगर तस्कर होय, द्वेषी दुश्मन नावे कोय ॥१९॥

भय सब भागे तुमरे नाम, मन वांछित पूरो सब काम।
भय-निवारण पूरे आस, चेतन जप चिन्तामणि पास ॥२०॥

चिन्तामणि के नाम से, सकल सिद्ध हों काम।
राज-ऋद्धि रमणी मिले, सुख सम्पत्ति बहु दाम ॥२१॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हय गय रथ पायक मिले, लक्ष्मी को नहिं पार।
पुत्र कलत्र मंगल सदा, पावे शिव दरबार॥२२॥

चेतन चिन्ता हरण को, जाप जपो तिहुं काल।
कर आंबिल षट् मास को, उपजे मंगल माल॥२३॥

पारस नाम प्रभाव से, बांधे बल बहु ज्ञान।
मन वांछित सुख उपजे, नित सुमरो भगवान्॥२४॥

सम्वत् अठारा ऊपरे, सालत्रीस को परिणाम।
पौष शुक्ल दिन पंचमी, वार शनिश्चर जाण॥२५॥

पढ़े गुणे जो भाव से, सुने सदा चित लाय।
चेतन सम्पत्ति बहु मिले, सुमरो मन वच काय॥२६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri